

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

नवजीवन संदेश

घुड़र आवल हेमंत सरकार...

माटी मांय कर रहे अहे पुकार...

इ कुरसी कर ठेलम ठेल में...

सरकार जाय जेल में...

जेल से भरलक हुंकार...

जनता सावधान अबरी बार...

बेड़ा पार.....

फिर से हेमंत सरकार



मजदूर नेता स्वर्गीय समरेश सिंह की बहू श्वेता सिंह विधानसभा पहुंची

श्वेता सिंह बोकारो स्टील सिटी की प्रथम विधायक चुनी गयी है। श्वेता झारखंड की एक प्रमुख राजनीतिक शख्सियत, जमुई, बिहार में जन्मी और रहने वाली हैं। वह झारखंड के सम्मानित व्यवसायी संग्राम सिंह की पत्नी हैं और एक प्रतिष्ठित मजदूर नेता स्वर्गीय समरेश सिंह की बहू हैं, जिन्होंने झारखंड में मंत्री के रूप में अपनी असाधारण सेवा दी है और श्रमिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके परिवार की सामाजिक कार्यों और नेतृत्व में किए गए अद्वितीय योगदान ने उन्हें राज्य की राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। 2024 के झारखंड विधानसभा चुनावों में, श्वेता सिंह ने बोकारो सीट पर विजय प्राप्त की, जो उनके राजनीतिक सफर का

झारखंड के सम्मानित व्यवसायी संग्राम सिंह की पत्नी हैं और एक प्रतिष्ठित मजदूर नेता स्वर्गीय समरेश सिंह की बहू हैं

एक नया अध्याय है। उनकी सफलता को उनके परिवार की सार्वजनिक सेवा की विरासत के रूप में देखा जा रहा है। श्वेता सिंह बिहार की विधायक श्रेयसी सिंह की चचेरी बहन हैं, और उनके चाचा, दिग्विजय सिंह, बिहार के एक सम्मानित नेता और अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री काल में केंद्रीय मंत्री रहे हैं। ऐसे शक्तिशाली राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखने और सामाजिक कल्याण पर मजबूत ध्यान देने के कारण श्वेता सिंह का राजनीति में उभार व्यापक रूप से सराहा गया है, और उनकी नेतृत्व क्षमता से बोकारो और आसपास के क्षेत्र में गहरा प्रभाव पड़ने की उम्मीद है।



इंटक नेता कुमार जयमंगल की जीत

झारखंड में इंडिया गठबंधन ने सत्ता बरकरार रखी है। 81 में 56 सीटों पर इस अलायंस की जीत हुई है। इधर, बेरमो विधानसभा सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार कुमार जयमंगल (अनूप सिंह) ने 29 हजार 375 मतां के अंतर से जीत दर्ज की है। कुमार जयमंगल को 90 हजार 246 वोट मिले हैं। उन्होंने झारखण्ड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के जयराम कुमार महतो को पराजित किया। महतो को 60,871 मत पड़े। इस सीट पर भाजपा

तीसरे नम्बर पर खिसक गई। भाजपा प्रत्याशी रविन्द्र कुमार पाण्डेय को 58,352 वोट मिले। कुमार जयमंगल बेरमो से दूसरी बार विधायक बने हैं। इससे पहले 2020 के उप चुनाव में उन्होंने जीत हासिल की थी। बेरमो से उनके पिता और इंटक नेता राजेन्द्र सिंह विधायक रहे हैं। कुमार जयमंगल इंटक से सम्बद्ध राष्ट्रीय खान मजदूर फेडरेशन के अध्यक्ष भी हैं। कुमार जयमंगल को हेमंत सोरेन का करीबी माना जाता है।

14 राज्यों की 46 विधानसभा, 2 लोकसभा के नतीजे वायनाड में प्रियंका चार लाख से ज्यादा वोटों से जीतीं

14 राज्यों की 46 विधानसभा और 2 लोकसभा (वायनाड, नांदेड़) सीटों के नतीजे आ गए हैं। वायनाड लोकसभा सीट पर प्रियंका गांधी ने सीपीआई के सत्यन मोकेरी को 4 लाख 10 हजार वोटों से हराया। भाजपा की नव्या हरिदास (1 लाख 9 हजार वोट) तीसरे नंबर पर रहीं। प्रियंका अपने भाई राहुल के 5 साल पुराने जीत का रिकॉर्ड नहीं तोड़ पाईं। राहुल ने 2019 के लोकसभा चुनाव में सीपीआई (एम) के पीपी सुनीर को 4 लाख 31 हजार वोटों के अंतर से हराया था। महाराष्ट्र की नांदेड़ लोकसभा सीट पर कांग्रेस के रवीन्द्र वसंत राव चव्हाण ने भाजपा के संतुक हंबाडे को 1457 वोट से हराया। यहां आखिरी राउंड की गिनती में देर रात 10 बजे के करीब परिणाम घोषित हुआ। मध्य प्रदेश की विजयपुर सीट पर कांग्रेस से भाजपा में आए वन मंत्री रामनिवास रावत हार गए। वहीं, उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों में से भाजपा गठबंधन को 7 और सपा को 2 सीटों पर जीत मिली है। 46 सीटों पर भाजपा गठबंधन 24,



कांग्रेस 7, टीएमसी 6, सपा 3, आप 3, सीपीआई-एम नेशनल पीपुल्स पार्टी और भारत आदिवासी पार्टी 1-1 सीटों पर आगे चल रही हैं। भाजपा गठबंधन में जेडीयू, हिंदुस्तान अवाम मोर्चा (, असम गण परिषद, यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी और राष्ट्रीय लोक दल शामिल हैं। चुनाव से पहले इन 46 सीटों में से 27 सीटों पर विपक्ष का कब्जा था। इनमें अकेले कांग्रेस के पास 13 सीटें थीं। वहीं, भाजपा की 11 सीटों समेत एनडीए के पास कुल 17 सीटें थीं। भाजपा गठबंधन को कुल 7 सीटों का फायदा है।



फिर से हेमंत सरकार: 56 सीटों पर जीत

पेज-07



राजगीर खेल परिसर 'गेम चेंजर' साबित होगा?

पेज-29



महाराष्ट्र में बीजेपी की 'अप्रत्याशित' जीत

पेज-11

index

RNI No: JHAHIN/2021/83133

नवजीवन संदेश

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

Web : navjeeewansandesh.com

संबद्धता : प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (भाषा)

■ वर्ष -4, ■ अंक -08, ■ कुल पृष्ठ -36

प्रधान संपादक

पंकज कुमार सिंह

संपादक

प्रभात मजुमदार

संपादकमंडल

जगन्नाथ मुंडा

सुनीता सिन्हा

श्रीमती छाया

रविप्रकाश

खेल डेस्क प्रभारी

चंचल भट्टाचार्य

छायाकार

नसीम अख्तर

संपर्क : 9431708799

9835437102

ईमेल: navjeeewansandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक पंकज कुमार सिंह द्वारा प्रथम तल, होटल आलोका कॉम्प्लेक्स रेडियम रोड, समीप कचहरी चौक, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा मैसर्स डी.बी. कॉर्प लि। प्लॉट नंबर 535 व 1272, लालगुटवा, पुलिस स्टेशन रातू रांची से मुद्रित।

संपादक : प्रभात मजुमदार* (*संपादक इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी)

आरएनआई नं.: JHAHIN/2021/83133

संपादकीय

बढ़ रही हैं 'रोड रेज' की घटनाएं

बी ते कुछ सालों में भारत में 'रोड रेज' की घटनाएं बढ़ी हैं। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने संसद के समक्ष इससे जुड़े आंकड़े पेश किए थे। उनके मुताबिक, साल 2019 में देश में 'रोड रेज' और लापरवाही से गाड़ी चलाने के डेढ़ लाख से ज्यादा मामले सामने आए थे। 2020 में इनकी संख्या बढ़कर एक लाख 83 हजार पर पहुंच गई। साल 2021 में इन मामलों की संख्या और ज्यादा बढ़कर दो लाख 15 हजार पर हो गई।

कई बार तो ट्रैफिक पुलिसकर्मी खुद भी 'रोड रेज' के शिकार हो जाते हैं। पिछले साल एक ड्राइवर ने जब लाल बत्ती होने पर भी अपनी गाड़ी नहीं रोकी, तो वहां मौजूद एक ट्रैफिक कॉन्स्टेबल ने उसे रुकने का इशारा किया। आरोपी ड्राइवर ने गाड़ी रोकने की जगह रफ्तार और बढ़ा दी। गाड़ी के सामने खड़े कॉन्स्टेबल बोनट पर गिर गए। फिर भी ड्राइवर 20 किलोमीटर तक गाड़ी की विंडशील्ड को मजबूती से पकड़कर अपनी जान बचाई।

एक शाख्स ने बहस होने के बाद चार लोगों पर कार चढ़ाने की कोशिश की। भारत में 'रोड रेज' की घटनाओं में वृद्धि के कारण सड़क पर अतिरिक्त सावधानी बरतना जरूरी हो गया है। आखिर क्या है 'रोड रेज' और कैसे इससे बचा जा सकता है? 'रोड रेज' शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर वाहन चालकों के हिंसक, खतरनाक और गुस्सेल व्यवहार के लिए किया जाता है। इसमें असभ्य इशारे करना, गालियां या धमकी देना और डराने के मकसद से खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाना शामिल है। 'रोड रेज,' (सड़क पर ड्राइविंग के दौरान आक्रामक या हिंसक व्यवहार) के कारण टकराव की नौबत आ सकती है और लड़ाई हो सकती है, जिससे लोगों को चोट लग सकती है और उनकी जान तक जा सकती है। इसे सार्वजनिक सुरक्षा के लिए भी खतरा माना जाता है।

मार्च 2011 में तत्कालीन केंद्रीय गृह राज्यमंत्री गुरदास कामत ने लोकसभा में 'रोड रेज' से संबंधित एक सवाल के जवाब में ये बातें कहीं थीं। उनसे पूछा गया था कि क्या आपराधिक कानूनों के तहत रोड रेज के मामलों में केस चलाने का कोई प्रावधान है। जवाब में गुरदास कामत ने कहा कि मोटर वाहन अधिनियम 1988 या (तत्कालीन) इंडियन पीनल कोड में "रोड रेज" की कोई परिभाषा नहीं है। किस तरह की घटनाओं और बर्ताव को "रोड रेज" माना जाता है, इसके उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि आईपीसी और मोटर वाहन अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत "रोड रेज" के अपराधों में कार्रवाई होती है। मुंबई में 31 अक्टूबर को एक स्कॉर्पियो सवार कारोबारी की कुछ लोगों से कहासुनी हो गई। इसके बाद कारोबारी ने चार लोगों पर गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की। पीड़ितों को सिर्फ हल्की चोटें आईं और बाद में उन्होंने अपने दोस्तों के साथ मिलकर कारोबारी की जमकर पिटाई कर दी। बाद में



दोनों पक्षों की ओर से पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई।

इससे पहले, 12 अक्टूबर को भी मुंबई में 'रोड रेज' की एक जानलेवा घटना सामने आई थी। 28 साल के आकाश परिवार के साथ घर लौट रहे थे। बाइक पर आकाश के साथ उनकी पत्नी बैठी हुई थीं। उनके माता-पिता रिक्शा से आ रहे थे। इस दौरान एक ऑटो रिक्शा ने गलत साइड पर खतरनाक तरीके से उनकी बाइक को ओवरटेक किया। इसकी वजह से आकाश और ऑटो चालक के बीच शुरू हुई कहासुनी मारपीट में बदल गई।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ऑटो ड्राइवर के कई साथी भी घटनास्थल पर पहुंच गए और उन्होंने आकाश को पीटना शुरू कर दिया। इल्जाम है कि आकाश जमीन पर गिर गए और उन्हें बचाने के लिए उनकी मां उनके ऊपर लेट गईं, फिर भी आरोपी लगातार उन्हें लात मारते रहे। बाद में पुलिस के आने पर आकाश को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने इस मामले में 10 लोगों को गिरफ्तार किया।

मध्य प्रदेश ट्रैफिक पुलिस के रिटायर्ड डीएसपी मोहित वरवंडकर का मानना है कि गाड़ी चला रहे व्यक्ति पर निर्भर करता है कि 'रोड रेज' की घटना होगी या नहीं। उन्होंने कहा, "कुछ लोग ट्रैफिक जाम में भी लगातार हॉर्न बजाते रहते हैं। कई लोग गलत तरीके से ओवरटेक करते हैं। ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं भी कई बार लड़ाई की वजह बन जाती हैं।"

मोहित वरवंडकर आगे बताते हैं, "अब वाहन चालकों में सहनशक्ति नहीं बची है। इसके अलावा सड़क पर उकसाने वाली घटनाएं भी ज्यादा हो रही हैं। जब लोगों में सहनशक्ति कम होती है, तो थोड़ा सा उकसावा मिलने पर भी 'रोड रेज' की शुरुआत हो सकती है। इसके पीछे एक वजह यह भी है कि लोग यातायात के नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। अगर नियमों का पालन करेंगे, तो लगातार हॉर्न बजाने जैसी उकसाने वाली घटनाएं नहीं होंगी।

इससे 'रोड रेज' के मामलों में भी कमी आएगी।"

डॉक्टर राहुल राय कक्कड़, गुरुग्राम के नारायणा हॉस्पिटल में मनोचिकित्सक हैं। वह रोड रेज का एक और पहलू बताते हैं, "बहुत सारे लोग अनजाने में 'डिसप्लेसमेंट डिफेंस मैकेनिज्म' का इस्तेमाल करते हैं। आम भाषा में कहें, तो एक जगह का गुस्सा और निराशा दूसरी जगह पर निकाल देते हैं। जैसे, अगर दफ्तर में बॉस ने सुनाया तो घर आकर बच्चों को डांट लगा दी।" वह आगे बताते हैं, "इस स्थिति में धैर्य कम हो जाता है। ऐसे में अगर दुर्घटना होती है या गाड़ी को नुकसान पहुंचता है, तो उनका गुस्सा बाहर आ जाता है। वे आवेश में आकर बिना सोचे प्रतिक्रिया देने लगते हैं। तब शायद तनाव किसी और चीज का होता है, लेकिन उसका असर यहाँ हो जाता है। खास बात यह है कि डिस्प्लेसमेंट आमतौर पर वहाँ होता है, जहाँ सामने वाला कमजोर है। जैसे, कई कार ड्राइवर रिक्शा वालों पर चिल्ला देते हैं, लेकिन बड़ी गाड़ी वालों से नहीं उलझते।"

मोहित वरवंडकर मानते हैं कि ट्रैफिक नियमों का पालन करने और संयम के साथ गाड़ी चलाने पर 'रोड रेज' से बचा जा सकता है। वह सलाह देते हैं, "अगर कोई आपको उकसा रहा है, तो उसके प्रति भी संयम बरतें। कुछ मिनट बाद वह अपने घर चला जाएगा और आप अपने रास्ते निकल जाएंगे। गुस्से में उसे कुछ बोलने से या भड़कने से लड़ाई की स्थिति बन सकती है, जो ठीक नहीं है। इसके अलावा अगर कोई गलत करता भी है, तो आपको उसे सजा देने का अधिकार नहीं है। उस स्थिति में गाड़ी का नंबर नोट कर पुलिस से शिकायत करनी चाहिए।"

डॉक्टर राहुल की राय भी इससे मिलती-जुलती है। वह कहते हैं, "कुछ लोग सड़क पर हुई कहासुनी को इंगो पर ले लेते हैं, जो सही नहीं है। ऐसी स्थिति में धैर्य बनाए रखना चाहिए। लड़ाई को बढ़ाने की बजाय खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर गाड़ी को नुकसान हो जाए, तो सोचें कि यह सिर्फ भौतिक नुकसान है। उसकी वजह से लड़कर अपने शरीर और जीवन को खतरे में ना डालें। बाद में चाहे, तो कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं।"





झारखंड में क्यों नहीं कामयाब हो सकी बीजेपी ?

■ मनीष कुमार

महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनाव के नतीजे अनुमान के विपरीत रहे। महाराष्ट्र में एनडीए यानी महायुति गठबंधन बहुमत से काफी आगे निकल गई तो वहीं, झारखंड में हेमंत सोरेन की अगुवाई में इंडिया गठबंधन ने जबर्दस्त वापसी की। महाराष्ट्र की 288 तथा झारखंड की 81 विधानसभा सीट समेत अन्य जगहों पर बीते 13 तथा 20 नवंबर को वोट डाले गए थे। झारखंड में जहां आरजेडी की स्थिति पहले से मजबूत हुई, वहीं, बिहार के उप चुनाव में वह अपनी यादव-मुस्लिम बहुल सीट भी नहीं बचा पाई। बिहार विधानसभा उप चुनाव की सभी चार सीट एनडीए अपने खाते में ले गई। इन दोनों राज्यों से इतर बिहार विधानसभा के उपचुनाव में एनडीए ने सभी चार सीटों पर जीत दर्ज की।

झारखंड और महाराष्ट्र, दोनों के ही एग्जिट पोल के नतीजे बता रहे थे कि झारखंड में एनडीए और इंडिया गठबंधन के बीच कांटे की टक्कर होगी। जबकि, महाराष्ट्र में एनडीए बढ़त बनाएगी। किंतु, दोनों ही राज्यों में सीटों का अंतर इतना हो जाएगा, यह अनुमान से परे था। एग्जिट पोल करने वाली लगभग सभी एजेंसियां गच्चा खा गईं। हां, एक्सिस माय इंडिया ने अवश्य ही झारखंड में एनडीए को 17 से 27 तथा इंडिया गठबंधन को 49 से 59 सीट आने का अनुमान लगाया था, जो परिणाम के काफी नजदीक रहा। इस बार झारखंड



में चुनाव प्रचार जमकर हुआ। एनडीए की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छह, अमित शाह ने 16, योगी आदित्यनाथ ने 14 सभाएं कीं। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने तो झारखंड में तो डेरा ही डाल रखा था। वहीं, इंडिया गठबंधन की तरफ से राहुल गांधी की छह सभाओं के अलावा लगभग पूरा जोर हेमंत सोरेन और उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने ही लगाया।

उधर, बिहार के विधानसभा उप चुनाव में चारों सीट, रामगढ़, बेलागंज, तरारी तथा इमामगंज में एनडीए ने जीत दर्ज कर महागठबंधन को बड़ा झटका दिया है। इससे पहले इनमें तीन सीट पर आरजेडी का कब्जा था। बेलागंज विधानसभा क्षेत्र में यादवों और मुसलमान वोटों की संख्या अधिक है। इसे लालू प्रसाद यादव के माय (मुस्लिम-यादव) समीकरण का गढ़ माना जाता रहा है। यहां से सुरेंद्र यादव 1990 से लगातार चुनाव जीतते आ रहे थे। सांसद चुने जाने के बाद इस बार उनके बेटे डॉ. विश्वनाथ यहां से चुनाव लड़ रहे थे। इस बार केवल इसी सीट के लिए लालू प्रसाद ने भी प्रचार किया था। लेकिन यहां से जेडीयू की मनोरमा यादव ने डॉ. विश्वनाथ को पराजित कर दिया। जानकार इसे जनसुराज की उपस्थिति का परिणाम बता रहे हैं। उनका कहना है कि जनसुराज के उम्मीदवार मो। अमजद ने मुसलमानों के वोट काटे। वे तीसरे नंबर पर रहे। अमजद भले ही जीत नहीं सके, लेकिन आरजेडी का गढ़ ढहाने का काम जेडीयू के लिए आसान तो कर ही दिया। प्रशांत किशोर अपनी पार्टी जनसुराज के प्रदर्शन पर कहते हैं, 'प्रदर्शन और बेहतर हो सकता था। मात्र एक महीने पुराने दल को 10 प्रतिशत वोट मिले हैं। इससे जाहिर होता है कि जनसुराज के प्रति लोगों में सकारात्मक सोच विकसित हुई है। आने वाले दिनों में यह अवश्य ही वोट में परिवर्तित होगा। यह कोई बहाना नहीं है।'

कोल्हान में नहीं चला पूर्व सीएम चंपई सोरेन का सिक्का



इस बार दोनों राज्यों में मतदान का प्रतिशत पिछले चुनाव से अधिक था। झारखंड के परिणाम इसलिए भी अप्रत्याशित रहे कि यहां जीत के लिए बीजेपी ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया था। आदिवासी अस्मिता तथा घुसपैठियों के मुद्दे को काफी जोर-शोर से उछाला गया, लेकिन ये सारे प्रयास धरे के धरे रह गए। जेएमएएम छोड़ कर बीजेपी में आए झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री व कोल्हान टाइगर चंपई सोरेन भी बीजेपी के लिए खोटा सिक्का ही साबित हुए। वे सरायकेला सीट से चुनाव जीत गए हैं। लेकिन, उनके गढ़ कोल्हान में बीजेपी मात्र दो सीट ही जीत सकी। इंडिया गठबंधन अपने गढ़ संथाल परगना और कोल्हान को बचाने में कामयाब रहा। इस बार जेएमएएम की अगुवाई में इंडिया गठबंधन को नौ सीटों के इजाफे के साथ 56 सीट मिली तो वहीं बीजेपी नीत एनडीए को छह सीट के नुकसान के साथ महज 24 सीट पर संतोष करना पड़ा। इस बार सात सीट के फायदे के साथ जेएमएएम 34, तीन सीट के लाभ के साथ आरजेडी चार पर पहुंच गई। जबकि कांग्रेस को दो के नुकसान के साथ 16 सीट मिली। इनके अन्य सहयोगियों के खाते में दो सीट आईं।

वहीं, दूसरी तरफ तीन सीट के नुकसान के साथ बीजेपी ने 21, दो के नुकसान के साथ एजेएसयू ने एक सीट हासिल की, जबकि पहली बार एक सीट जेडीयू के खाते में गई। इनके अन्य सहयोगियों को भी दो सीट का नुकसान हुआ, उन्हें केवल एक सीट मिली। वहीं, पिछले विधानसभा चुनाव यानी 2019 में झारखंड में जेएमएएम को 30, बीजेपी को 25, कांग्रेस को 16, जेवीएम को तीन तथा एजेएसयू को दो और आरजेडी को एक सीट मिली थी।

राजनीतिक समीक्षक एके चौधरी के अनुसार झारखंड में हेमंत सोरेन के पक्ष में सिम्पैथी फैक्टर भी काफी प्रभावी रहा। वे कहते हैं, “हेमंत सोरेन अपने चुनाव प्रचार के दौरान लगातार यह संदेश देने की कोशिश करते रहे कि आदिवासी चेहरे को कुचलने के लिए किस तरह उन्हें गलत तरीके से जेल में डाला गया। इसमें वे कामयाब भी रहे। कई विधानसभा सीट पर 40

प्रतिशत से अधिक आदिवासी मतदाता हैं। वे एकजुट होकर उनके पक्ष में खड़े हो गए।”

हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद उनकी पत्नी कल्पना सोरेन सामने आईं और जहां-जहां गईं, वहां उन्होंने पति के साथ ज्यादाती की बात समझाने की कोशिश की। चुनाव प्रचार के दौरान मईयां सम्मान योजना की राशि दो हजार से बढ़ाकर प्रतिमाह 2,500 रुपये करने की चर्चा भी उन्होंने खूब की। कल्पना ने सरना धर्म कोड की भी बात की और यह भी कहा कि बीजेपी ने नेता बाहर के हैं, वे हमारी भाषा-संस्कृति तक नहीं जानते। ये भला हमारे लिए क्या नीतियां बनाएंगे। अपने सहज व सरल अंदाज से खासकर महिलाओं को कनेक्ट करने में वे सफल रहें। वे गांडेय सीट से चुनी गई हैं। संजीवनी साबित हुई मईयां सम्मान योजना

चौधरी कहते हैं, “महिलाओं की कल्याणकारी योजनाओं का भी असर जेएमएएम के पक्ष में गया। बेरोजगार महिलाओं के लिए मासिक सहायता, स्कूली लड़कियों को मुफ्त साइकिल, अकेली महिलाओं को नकद सहायता जैसी योजनाओं ने आदिवासी और कमजोर वर्ग की महिलाओं को जेएमएएम के पाले में लाने का काम तो किया ही, इसके साथ मईयां सम्मान योजना ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।” महिलाओं को सालाना 12,000 रुपये देने वाली इस योजना तथा सर्वजन पेंशन योजना ने हेमंत के पक्ष में संजीवनी का काम किया। फिलहाल झारखंड की करीब पचास लाख से अधिक महिलाओं को मईयां सम्मान योजना के तहत 2,000 रुपये प्रतिमाह की मदद दी जा रही है। चुनाव के पहले जेएमएएम ने इस राशि को बढ़ाकर 2,500 रुपये कर दिया था। जबकि, गोगो दीदी योजना के तहत बीजेपी ने 2,100 रुपये प्रतिमाह देने का वायदा किया था। चुनाव के ऐन मौके पर बिजली बिल माफ करना भी जेएमएएम के लिए फायदेमंद साबित हुआ। सरकार बनने पर आरक्षण का दायरा बढ़ाने का भी वादा किया गया। चौधरी के अनुसार “बीजेपी द्वारा 2016 में सीएनटी एक्ट में किया गया बदलाव अभी भी उन पर भारी पड़ रहा। आदिवासी इसे लेकर उनसे आज तक बिदके हुए हैं।” इस संशोधन के बाद जमीन के स्वरूप (नेचर) को बदला जा सकता था। इसे आदिवासियों ने उनकी जमीन छीनने का प्रयास माना, जबकि बीजेपी ने यह सोचकर ऐसा किया था कि इससे राज्य में उद्योग-धंधे लगाना आसान हो सकेगा।

बंटोगे तो कटोगे पर भारी पड़ा जेएमएएम का आदिवासी कार्ड

बीजेपी के कई धुरंधर नेताओं ने झारखंड में धुआंधार प्रचार किया। संथाल परगना क्षेत्र में घुसपैठ को लेकर बीजेपी काफी आक्रामक रही। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने तो यहां तक कहा कि झारखंड में भाजपा (बीजेपी) की सरकार बनाए, घुसपैठियों को उल्टा लटका देंगे। उन्होंने घुसपैठियों को ही जेएमएएम, आरजेडी और कांग्रेस का वोट बैंक बताया। जमशेदपुर में स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि वोट और तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले घुसपैठियों को संरक्षण दे रहे हैं। उन्होंने चंपई सोरेन और सीता सोरेन के अपमान को आदिवासियों का अपमान बताया।

पत्रकार अमित पांडेय कहते हैं, “बीजेपी ने बंटोगे तो कटोगे का नारा देकर घुसपैठ की चर्चा करते हुए हिंदुत्व कार्ड खेला और वहीं जेएमएएम ने अपनी योजनाओं की चर्चा के साथ आदिवासी कार्ड खेला। जेएमएएम का आदिवासी कार्ड बीजेपी के कार्ड पर भारी पड़ गया। आदिवासियों का भरोसा गुरुजी शिबू सोरेन के पुत्र हेमंत सोरेन पर ही रहा।”

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा दिए गए नारे बंटोगे तो कटोगे को बीजेपी के नेताओं ने इस चुनाव में खूब उछाला। पांडेय कहते हैं, “यह नारा बीजेपी के लिए नुकसानदेह ही साबित हुआ। जिस संथाल परगना क्षेत्र के लिए यह नारा गढ़ा गया, वहां की 18 सीट में से केवल एक जरमुंडी सीट बीजेपी जीत पाई। हिंदू वोटों को एकजुट करने के लिए दिए गए इस नारे ने मुस्लिमों का ध्रुवीकरण कर दिया और उन्होंने एकजुट होकर इंडिया गठबंधन के पक्ष में मतदान कर दिया।”

भाजपा की हार में जयराम भी एक फैक्टर साबित हुआ



झारखंड चुनाव नतीजों में इंडिया ब्लॉक की जीत के बाद जयराम महतो फैक्टर भी चर्चा में हैं। जयराम महतो की पार्टी की मौजूदगी ने कई सीटों पर एनडीए की संभावनाओं को नुकसान पहुंचाया। जयराम महतो ने 71 सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन जीत सिर्फ डुमरी सीट पर मिली। बेरमो सीट पर उन्हें दूसरे नंबर से संतोष करना पड़ा। कुल मिलाकर जेएलकेएम को 70 सीटों पर हार का सामना करना पड़ा। वहीं, जेएलकेएम ने 34 सीटों पर जेएमएएम की जीत में अहम भूमिका निभाई, जहां उसने तीसरे नंबर पर रहकर एनडीए का वोट काट दिया। चंदनकियारी सीट पर झामुमो के उमाकांत रजक ने जीत दर्ज की। उन्हें 90027 वोट मिले। जेएलकेएम के अर्जुन राजवार दूसरे नंबर पर रहे और उन्हें 56294 वोट मिले। बीजेपी के अमर कुमार बाउरी तीसरे नंबर पर रहे और उन्हें 56091 वोट मिले। गोमिया सीट पर झामुमो के योगेंद्र प्रसाद ने जीत दर्ज की। उन्हें 95170 वोट मिले। जेएलकेएम की पूजा कुमारी दूसरे नंबर पर रहीं और उन्हें 36093 वोट मिले। आजसू के लंबोदर महतो 54508 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे।



फिर से हेमंत सरकार: 56 सीटों पर जीत

झारखंड में हेमंत सोरेन दोबारा सत्ता में आ गए हैं। 81 सीटों में झामुमो गठबंधन ने 56 सीटों पर जीत दर्ज की है। यह आंकड़ा 41 के बहुमत से 15 सीट ज्यादा है।

भाजपा गठबंधन ने 24 सीटों पर जीत दर्ज की है यानी बहुमत के आंकड़े से 13 सीट कम। हेमंत सोरेन ने कहा कि चुनाव में इंडिया, ब्लॉक का प्रदर्शन अच्छा रहा है। सोरेन ने जनता का धन्यवाद जताया और कहा कि जमीन पर मौजूद उन नेताओं का भी शुक्रिया, जो जनता की ताकत को पार्टी तक लेकर आए।

रांची की सड़कों पर अब पोस्टर लग रहे हैं। सबके दिलों पर छा गया, शेरदिल सोरेन फिर आ गया। हेमंत सोरेन झारखंड के पहले ऐसे मुख्यमंत्री होंगे जो लगातार दूसरा चुनाव जीतकर सीएम की कुर्सी संभालेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी बोले- बांग्लादेशियों के मुद्दे पर काम करेंगे : झारखंड के नतीजे सामने आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'मैं झारखंड की जनता को नमन करता हूं। विपक्ष में रहकर हम राज्य के विकास और बांग्लादेशियों के मुद्दे पर काम करेंगे।'

भाजपा बोली- कांग्रेस यहां ईवीएम का मुद्दा क्यों नहीं उठाती? : झारखंड के भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा, 'कांग्रेस झारखंड में ईवीएम

हेमंत सोरेन 28 नवंबर को सीएम पद की शपथ लेंगे:

झारखंड में इंडिया ब्लॉक की दोबारा सरकार बनेगी। रविवार को इंडिया गठबंधन के नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक सीएम आवास में हुई। इसमें हेमंत सोरेन विधायक दल के नेता चुन लिए गए। इसके बाद उन्होंने राजभवन जाकर सीएम पद से इस्तीफा दिया और नई सरकार बनाने का दावा पेश किया।

राज्य गठन के बाद पहली बार है जब सरकार रिपीट हुई है। अब तक हर चुनाव में सरकार बदल जाती थी। राजभवन के बाहर पत्रकारों के साथ बातचीत में हेमंत सोरेन ने कहा- राज्यपाल संतोष गंगवार ने कार्यवाहक सीएम नियुक्त किया है। शपथ ग्रहण समारोह 28 नवंबर को होगा। समारोह सुबह 11:30 बजे होगा। झारखंड के मुख्यमंत्री और जेएमएम के कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन ने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंप दिया और राजभवन में सरकार बनाने का दावा पेश किया। हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली जेएमएम ने 81 सदस्यीय झारखंड विधानसभा में 56 सीटों के साथ इंडिया ब्लॉक को जीत दिलाई।

का मुद्दा क्यों नहीं उठाती? जब हारते हैं तब ऐसा करते हैं। मैं हेमंत सोरेन को चुनाव जीतने पर बधाई देता हूं और जनादेश को स्वीकार करता हूं।

एग्जिट पोलस गलत साबित हुए: इस बार विधानसभा चुनाव की वोटिंग खत्म होने के बाद झारखंड में 8 एग्जिट पोल आए। इनमें से 4 में भाजपा गठबंधन, जबकि 2 में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने का अनुमान जताया गया। बाकी 2 एग्जिट पोलस ने हंग असेंबली के आसार जताए थे।

हेमंत सोरेन ने कहा, 'मैं सभी समुदायों के लोगों,

किसानों, महिलाओं और युवाओं को शुक्रिया कहना चाहता हूं। जमीन पर मौजूद नेताओं का भी मैं शुक्रिया करता हूं। हम पूरे नतीजों का इंतजार कर रहे हैं। इसके बाद हम आगे के कदम पर फैसला करेंगे। इंडिया अलायंस की परफॉर्मेंस बहुत अच्छी रही है।'

गांडेय से झामुमो प्रत्याशी और हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने कहा कि गांडेय की जनता ने एक बेटी की तरह मुझे प्यार दिया। इसके लिए उनका बहुत-बहुत धन्यवाद। सबका प्यार और आशीर्वाद मिलता रहे, यही प्रार्थना है।



कल्पना सोरेन: 100 से अधिक सभा कर महिलाओं और आदिवासियों को साधा

04 मार्च 2024, गिरिडीह पहली बार हाथ में माइक लिए जनता के सामने आई कल्पना सोरेन। मंच पर तब के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन और अन्य नेता थे। सामने समर्थकों की भारी भीड़ थी। सबका अभिवादन कर जब बोलने लगीं तो उनकी आवाज भर आई। चुप हो गईं। फिर लड़खड़ाती आवाज और आंखों में आंसू लिए बोलती रहीं। इस बीच समर्थक नारा लगाते रहे- जेल का ताला टूटेगा, हेमंत सोरेन छूटेगा।

ये नौ महीने पहले की बात है। आज कल्पना सोरेन बदल चुकी हैं। मंच से संथाली, हिन्दी और बंगाली में धारदार भाषण देती हैं। कभी कार की बोनट पर चढ़ जाती हैं तो कभी सीधे भीड़ में जाकर महिलाओं के गले लग जाती हैं। उनकी सहज भाव भंगिमाएं लोगों में जुड़ाव पैदा कर रही हैं। कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए पूछती थीं- यहां क्या चल रहा है...?

कल्पना अपने भाषण में हमेशा तीर-धनुष की बात करती थी। अगर वह अन्य सहयोगी दलों के लिए सभा करती थी तो उस पार्टी के सिंबल की बात करती थी। हर जगह जनता में उत्साह बढ़ाने के लिए वो ये जरूर पूछती थीं- यहां (विधानसभा) क्या चल रहा है? जैसे रांची में क्या चल रहा है? उधर से जवाब आया तीर-धनुष। इस नारे को वो बार-बार जनता के बीच दोहराती थी।

सीधा जवाब देने के साथ-साथ मुद्दों को भी उठाती रहीं

01 उन्होंने अपने भाषण में 2019 के पथलगड़ी आंदोलन और छत्तीसगढ़ के हसदेव के जंगलों की कटाई की बातें कर आदिवासियों को उनकी जल-जंगल और जमीन छीनने की बातों को समझाती रहीं।

02 सरना धर्म कोड व हेमंत सोरेन के कामों की बात कर भाजपा पर आदिवासी सिम्ता को खत्म करने की साजिश रचने की बातें की।

03 ओबीसी आरक्षण के दायरे को बढ़ाने व 1932 खतियान की बातें भी अपने अंदाज में की।

100 से ज्यादा सभा की : इस चुनाव में इंडिया ब्लॉक के प्रत्याशियों में सबसे ज्यादा डिमांड कल्पना सोरेन की सभा की रही। उन्होंने पूरे चुनाव प्रचार में 100 से ज्यादा सभा की। उन्होंने सिर्फ जेएमएम उम्मीदवारों के लिए ही चुनावी सभा नहीं की, बल्कि कांग्रेस-आरजेडी और भाकपा-माले के प्रत्याशियों के लिए भी वोट मांगा।

कल्पना की सधी भाषा और आक्रामक नए अवतार से बीजेपी नेता परेशान रहे। उनके कद का झारखंड बीजेपी में कोई ऐसी महिला नेता नहीं है, जो जवाबी हमला बोल सके। 31 जनवरी 2024 की रात जमीन घोटाले के आरोप में तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन

को ईडी ने गिरफ्तार किया। उसके बाद उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दिया और चंपाई सोरेन को मुख्यमंत्री बना दिया गया। मीडिया रिपोर्ट है कि हेमंत सोरेन कल्पना को ही सीएम बनाना चाहते थे। इसके लिए गांडेय सीट को खाली भी करा लिया गया था, लेकिन सोरेन परिवार में विरोध के बाद चंपाई को बनाया गया।

एक इंटरव्यू में कल्पना ने कहा था, 'राजनीति में आना निश्चित नहीं था। 31 जनवरी की रात भयावह रात थी। काली रात थी। उस वक्त समझ नहीं आ रहा था क्या हो रहा है? अचानक ऐसी परिस्थिति बनी की आना पड़ा।'



भारतीय जनता पार्टी का झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा नहीं चला। 81 विधानसभा सीटों के रिजल्ट में भाजपा गठबंधन 24 सीटों पर सिमट गई है। भाजपा की सबसे बड़ी हार एक बार फिर

आदिवासी सीटों पर हुई है। 28 आदिवासी रिजर्व सीटों में से पार्टी सिर्फ एक सीट सरायकेला ही जीत पाई है। 2019 में भी पार्टी 2 सीट पर ही जीत पाई थी। हालांकि, तब एनडीए में ना आजसू थी और ना बाबूलाल मरांडी।

चुनावी आंकड़े बताते हैं कि आदिवासियों का भरोसा भाजपा पर अभी तक नहीं लौट पाया है। वह अब भी रघुवर दास के सीएनटी एक्ट में बदलाव की कोशिशों को नहीं भूल पाए हैं। यह घाव चंपाई सोरेन के भाजपा में आने से भी नहीं भरा है।

भाजपा की आदिवासी रिजर्व सीटों पर करारी हार हुई है। छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम में बदलाव की कोशिशों नासूर साबित हुई है। इसकी भरपाई चंपाई सोरेन भी नहीं कर पाए हैं।

2014 के पहले तक भाजपा आदिवासी रिजर्व सीटों पर ठीक-ठाक प्रदर्शन करती थी, लेकिन 2014 में किए गए प्रयोग से पार्टी को बड़ा धक्का लगा है। 2009 में भाजपा 28 आदिवासी रिजर्व सीटों में से 9, 2014 में 11 सीटें जीती थी। यह आंकड़ा 2019 में घटकर दो पर आ गया। और इस बार यानी 2024 में एक पर है।

दरअसल, नवंबर 2016 में तत्कालीन सीएम रघुबर दास ने सीएनटी एक्ट की धारा 46 में बदलाव का प्रस्ताव पास किया था। इस बदलाव के तहत आदिवासियों की जमीन के स्वभाव को बदला जा सकता था। उन्होंने राज्य में उद्योग लगाने को लेकर ऐसा किया था। हालांकि, आदिवासियों के बीच जैसेजैसे जागरूकता बढ़ी, भाजपा के प्रस्ताव को लेकर लोगों में बिजनेसमैन को फायदा पहुंचाने के लिए संशोधन हो रहा है। इस बदलाव से बिजनेसमैन जब चाहे सरकार से सीधे जमीन ले लेगा। इसका भारी विरोध हुआ। तब रघुबर सरकार को संशोधन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा था। दास ने कहा था, 'झामुमो, कांग्रेस आदिवासियों का विकास नहीं चाहते हैं। सीएनटी एक्ट में संशोधन सरकारी योजनाओं को लेकर जमीन के लिए किया

झारखंड विस चुनाव में नहीं चला बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा

जा रहा था। संशोधन में यह बात पूरी तरह से स्पष्ट भी थी। इस संशोधन से किसी भी निजी संस्था या संस्थान को लाभ नहीं होने वाला था।'

भाजपा चुनाव प्रचार में आक्रामक तो रही, लेकिन आदिवासी चेहरे की कमी खली। बाबूलाल मरांडी को छोड़कर ऐसा कोई आदिवासी नेता नहीं रहा, जो पूरे प्रदेश में प्रचार के दौरान घूमा हो। मरांडी को फ्री हैंड तो दिया गया, लेकिन वे चुनाव लड़ने आदिवासी सीट को छोड़कर जनरल सीट पर चले गए। इसका वोटों में गलत मैसेज गया।

आदिवासी भाजपा से जुड़ाव नहीं महसूस कर पाए। भाजपा से दूसरी गलती ये हुई कि बाहरी नेता हेमंत सोरेन पर ज्यादा आक्रामक रहे। हेमंत को जेल भेजना भी आदिवासी वोटों को नाराज कर गया। चुनाव के बीच में सेंट्रल एजेंसियों की रेड से लोगों के बीच जैसेजैसे जागरूकता बढ़ी, भाजपा को महिला नेता की कमी भी खली। कल्पना के वोटों से सीधा जुड़ाव का काट भाजपा के पास नहीं था।

भाजपा ने संथाल परगना के घुसपैठ के मुद्दे को पूरे राज्य का बड़ा मुद्दा बना दिया। आक्रामक तरीके से प्रचार करती रही। जहां घुसपैठ नहीं है वहां भी इसे मजबूती से उठाया गया, जिसका खामियाजा पार्टी को उठाना पड़ा।

हिमंता बिस्वा सरमा ने पूरे प्रचार को असम की तरह बना दिया। एक इलाके के घुसपैठ के मुद्दे को पूरे प्रदेश का बनाया। जबकि, सच्चाई ये है कि झारखंड के किसी इलाके का सीधा कनेक्शन विदेशी धरती (बांग्लादेश) से नहीं है।

इसका रिएक्शन ये हुआ कि घुसपैठ वाले इलाके में भी भाजपा की करारी हार हुई। पार्टी ने तीन बार से जीत रही राजमहल सीट को भी गंवा दिया। पार्टी संथाल परगना में एक सीट पर सिमट गई, जबकि 2019 में 4 सीटें जीती थी।

झारखंड विधानसभा चुनाव में अबकी बार भाजपा ने नया प्रयोग किया। लोकल नेताओं को किनारे लगाकर पूरी

कमान सेंट्रल लीडरशिप ने ले ली। टिकट वितरण से लेकर प्रचार की कमान तक हिमंत बिस्वा सरमा और शिवराज सिंह चौहान ने संभाल रखी थी।

लोकल नेता अपने एरिया तक सिमटे रहे। यहां तक की

पड़ोसी राज्य बिहार के नेताओं तक को प्रचार में नहीं बुलाया गया। इससे कांडर कंप्यूज हो गए कि हमें क्या करना है? उनको हर चीज के लिए दूसरे नेताओं से पूछना पड़ रहा था।

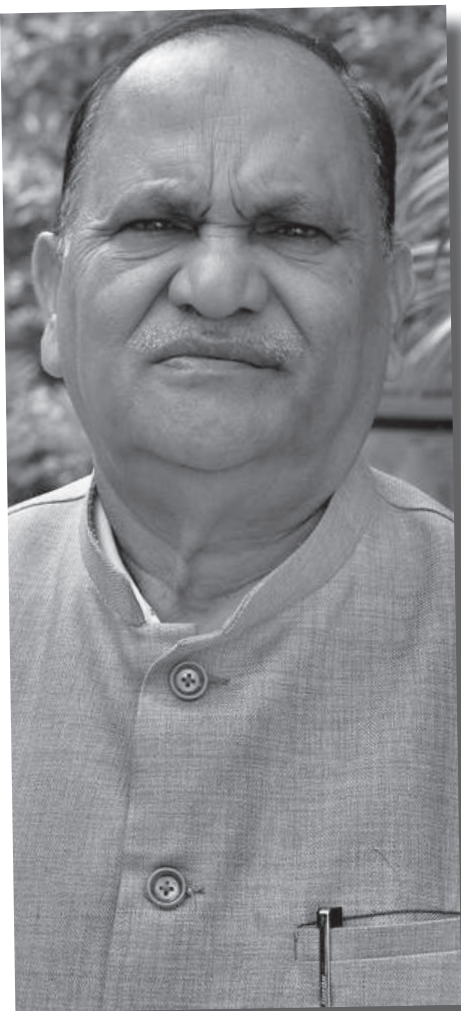
हेमंत पर बढ़ा भरोसा : भाजपा ने संकल्प पत्र जारी किया। इसमें कमोबेश वैसे ही वादे किए गए थे, जैसा INDIA ने किया था। इस पर हेमंत सोरेन को सत्ता में रहने का लाभ मिला। लोगों ने उनके वादे पर ज्यादा भरोसा जताया।

खासकर महिलाओं ने हेमंत की मंईयां सम्मान योजना को पसंद किया और जमकर वोटिंग की। इसमें भी पहले चरण की वोटिंग से पहले आधी रात को महिलाओं के खाते में पैसा आ गया। जो गेम चेंजर साबित हुआ।

भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में महिलाओं को गोगो दीदी योजना के तहत 2100 रुपए हर महीने देने का वादा किया है। इसके बदले इंडिया ने 2500 रुपए देने का वादा किया है। खास बात है कि हेमंत सरकार अभी 18 से 50 साल की महिलाओं को 1000 रुपए दे रही है। हालांकि, आचार संहिता लगने से पहले इसे बढ़ाकर 2500 रुपए कर चुकी है। इसी योजना का ऐलान अपने घोषणा पत्र में भी किया है।

भाजपा ने स्नातक और स्नातकोत्तर बेरोजगारों को दो साल तक प्रति माह 2 हजार रुपए भत्ता। पहले साल में डेढ़ लाख सरकारी पदों पर नियुक्ति। 5 साल में 2187 लाख पदों पर नियुक्ति करने का वादा किया है। पांच साल में 5 लाख युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। जबकि, इंडिया गठबंधन ने युवाओं को रोजगार की गारंटी दी जाएगी। झारखंड के 10 लाख युवक-युवतियों को नौकरी एवं रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा।

भाजपा ने सभी परिवारों 500 रुपए में गैस सिलेंडर का वादा किया है। साथ ही दीवाली और रक्षाबंधन पर एक-एक फ्री सिलेंडर देने का ऐलान किया है। वहीं, इंडिया ब्लॉक ने गरीब परिवार को 450 रुपए में गैस सिलेंडर देने का वादा किया है।



रांची में भाजपा से सीपी सिंह जीते, धनबाद से राज सिन्हा और झारिया में रागिनी सिंह

झारखंड की 81 सीटों का चुनाव परिणाम आ गए हैं। इंडिया गठबंधन की सरकार बनने वाली है। रांची से भाजपा के सीपी सिंह और झरिया से भाजपा प्रत्याशी रागिनी सिंह ने चुनाव जीता। धनबाद से भी भाजपा के राज सिन्हा ने जीत दर्ज करवाई। वहीं, जमशेदपुर पश्चिम विधानसभा सीट पर जदयू के सरयू राय ने जीत दर्ज की।

बोकारो से भाजपा प्रत्याशी बिरंची नारायण और कांग्रेस उम्मीदवार श्वेता सिंह के बीच टक्कर थी। इसमें श्वेता सिंह ने जीत दर्ज किया। वहीं, बेरमो में कांग्रेस के कुमार जयमंगल सिंह ने चुनाव जीता।

रांची विधानसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी सीपी सिंह ने चुनाव जीत लिया। उनके सामने झामुमो उम्मीदवार महुआ माझी थीं। सीपी सिंह 1997 से लगातार इस सीट पर जीत दर्ज करा रहे हैं। वहीं, झामुमो प्रत्याशी महुआ माझी राज्यसभा सांसद भी है।

झारखंड की हॉट सीट में शामिल जमशेदपुर पश्चिम विधानसभा सीट पर राज्य के स्वास्थ्य

सीपी सिंह 1997 से लगातार इस सीट पर जीत दर्ज करा रहे हैं। वहीं, झामुमो प्रत्याशी महुआ माझी राज्यसभा सांसद भी है।

मंत्री सह स्थानीय विधायक बन्ना गुप्ता चुनाव हार गए। वो कांग्रेस से चुनाव मैदान थे। इस सीट से जदयू के सरयू राय ने चुनाव जीता। इस सीट पर सरयू राय ने 2014 में बन्ना गुप्ता को हराया था। वहीं, 2019 में सरयू राय जमशेदपुर पूर्वी से चुनाव लड़कर तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास को परास्त किया था।

धनबाद विस सीट पर भाजपा के राज सिन्हा से कांग्रेस उम्मीदवार अजय दुबे का सीधा मुकाबला है। 2014 और 2019 के विधानसभा चुनाव में राज सिन्हा ने धनबाद से जीत कर विधायक बने थे।

झरिया विधानसभा क्षेत्र झारखंड का हॉट चुनावी सीट है। यहां कांग्रेस की पूर्णिमा नीरज सिंह और भाजपा की रागिनी सिंह में मुकाबला था। इस बार रागिनी सिंह ने चुनाव जीता। दोनों ही रिश्ते में देवरानी-जेठानी हैं। इस सीट से 2019 में पूर्णिमा नीरज सिंह ने जीत हासिल की थी।

बोकारो विधानसभा सीट से भाजपा के बिरंची नारायण और कांग्रेस की श्वेता सिंह के बीच सीधा मुकाबला था। श्वेता सिंह ने चुनाव में जीत हासिल की। 2019 के विधानसभा चुनाव में बिरंची नारायण ने जीत हासिल की थी।

बेरमो विधानसभा सीट पर इस बार कांग्रेस के कुमार जयमंगल, भाजपा प्रत्याशी रवींद्र पांडेय और जेएलकेएम प्रत्याशी जयराम महतो के बीच मुकाबला था। जयमंगल जीत गए। 2019 में भी कुमार जयमंगल ने जीत दर्ज की थी। इस सीट से कुमार जयमंगल सिंह के पिता राजेंद्र प्रसाद सिंह चार बार विधायक रह चुके हैं।



महाराष्ट्र में बीजेपी की 'अप्रत्याशित' जीत

महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में महायुक्ति के नाम से चुनाव लड़ रहे बीजेपी नेतृत्व के एनडीए गठबंधन ने ना सिर्फ स्पष्ट बहुमत हासिल किया है, बल्कि राज्य में अभी तक की सबसे बड़ी जीत में से एक दर्ज की है। वहीं, झारखंड में कांग्रेस के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही झारखंड मुक्ति मोर्चा पहले से अधिक सीटें हासिल कर अपनी सरकार बचाने में कामयाब रही है। इस साल मई में हुए लोकसभा चुनाव के बाद ये सबसे बड़े राज्य के चुनाव थे। खासकर नजरें महाराष्ट्र पर थीं।

जहां आम चुनाव में कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार गुट) और शिवसेना (उद्धव ठाकरे) गुट के महाविकास अघाड़ी गठबंधन ने बड़ी जीत हासिल कर बीजेपी गठबंधन की सत्ता में वापसी पर सवाल खड़े कर दिए थे। लेकिन, 23 नवंबर को आए नतीजों ने सभी को चौंका दिया है। महाराष्ट्र के नतीजों ने शरद पवार और उद्धव ठाकरे जैसे दिग्गज नेताओं के राजनीतिक भविष्य पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं।

जानकारों का मानना है कि महाराष्ट्र में बीजेपी ने अप्रत्याशित जीत हासिल कर साबित कर दिया है कि चुनाव प्रबंधन और जनता की नब्ब को समझने के मामले में अभी भी बीजेपी का कोई मुकाबला नहीं है। बीजेपी प्रवक्ता सैयद जफर इस्लाम कहते हैं, "हमें 200 सीटें जीतने की उम्मीद थी, लेकिन हमारा स्ट्राइक रेट इतना बेहतर होगा, ये हमने भी नहीं सोचा था। जनता ने महायुक्ति के काम पर एक बार फिर से मुहर लगा दी है।"

आम चुनावों में जब बीजेपी अपने दम पर बहुमत हासिल नहीं कर सकी थी और सरकार बनाने के लिए उसे गठबंधन सहयोगियों पर निर्भर होना पड़ा था।

तब ये कहा जाने लगा था कि दस साल से केंद्र की सत्ता पर काबिज बीजेपी के ढलान का वक्त आ गया है। लेकिन, उसके बाद हुए राज्य चुनावों में बीजेपी ने पहले हरियाणा में पहले से अधिक सीटें जीतकर वापसी की। और अब महाराष्ट्र में अप्रत्याशित जीत हासिल कर साबित कर दिया है कि चुनाव प्रबंधन और जनता की नब्ब को समझने के मामले में अभी भी उसका का कोई मुकाबला नहीं है।

राजनीतिक विश्लेषक शरद गुप्ता कहते हैं, "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीजेपी ने आम चुनावों में लगातार तीसरी बार वापसी की थी, लेकिन कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष के गठबंधन ने जिस तरह से बीजेपी को अकेले बहुमत तक पहुंचने से रोका था, उसके बाद ये कयास लगाया जाने लगा था कि अब बीजेपी का ढलान शुरू हो जाएगा।" "हरियाणा के बाद अब महाराष्ट्र में जबरदस्त जीत हासिल कर बीजेपी ने साबित कर दिया है कि ये सिर्फ कयास ही था।" शरद गुप्ता कहते हैं, "अब से पहले ये देखा गया था कि जब किसी सरकार का ढलान शुरू होता था, तब वो रुकता नहीं था, चाहे वाजपेयी की एनडीए सरकार हो या उसके बाद की दूसरी यूपीए सरकार।" "एक बार अगर सत्ताधारी दल का ढलान शुरू होता था, तो उसके बाद वापसी नहीं हुई, चाहे केंद्र में हो या फिर राज्यों में।"

"बीजेपी को जब कर्नाटक और तेलंगाना में झटका लगा और फिर लोकसभा में सीटें कम हुईं तो कहा जाने लगा कि बीजेपी का अब ढलान शुरू हो रहा है, लेकिन फिर विधानसभा चुनावों में जिस तरह हरियाणा और महाराष्ट्र में बीजेपी ने असंभव से दिखने वाले नतीजे हासिल किए हैं, उससे ये स्पष्ट हो गया है कि अभी ना सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करिश्मा बरकरार है,

बल्कि बीजेपी की भी लोकप्रियता वही है।"

हरियाणा और महाराष्ट्र की जीत के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से बीजेपी को मिले सहयोग की भी अहम भूमिका मानी जा रही है। जानकार मानते हैं कि हाल के चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि बीजेपी और आरएसएस के बीच कोई तनाव नहीं है।

शरद गुप्ता कहते हैं, "चुनाव प्रबंधन को लेकर बीजेपी और आरएसएस के बीच तनाव की बातें की जा रही थीं, लेकिन हाल के चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि बीजेपी और आरएसएस के बीच कोई तनाव नहीं है। आगामी दिल्ली चुनावों के लिए भी आरएसएस कमर कस रही है।"

संसद का शीतकालीन सत्र भी शुरू हो रहा है। महाराष्ट्र चुनाव नतीजों के बाद सदन में बीजेपी के सामने अब पहले से कमजोर विपक्ष होगा। विश्लेषक मान रहे हैं कि ये भी बीजेपी के लिए राहत की बात है। शरद गुप्ता कहते हैं, "अगर बीजेपी महाराष्ट्र में हार जाती तो सदन में भी उसे दिक्कों का सामना करना पड़ता, लेकिन अब बीजेपी खुलकर ये कह पाएगी कि विपक्ष के पास ना मुद्दे हैं, ना जनता का समर्थन है।" विश्लेषक मान रहे हैं कि बीजेपी को महाराष्ट्र में मिली इस प्रचंड जीत से पार्टी और भी मजबूत होगी।

वरिष्ठ पत्रकार समर खडस कहते हैं, "महाराष्ट्र, खासकर राजधानी मुंबई देश की अर्थव्यवस्था के लिए बेहद अहम है। इस जीत से निश्चित रूप से बीजेपी पहले से अधिक ताकतवर होगी।"

बीजेपी ने अपने दम पर 133 सीटें हासिल की हैं, जो बहुमत के आंकड़े से कुछ ही कम हैं। ऐसे में विश्लेषक ये मान रहे हैं कि महाराष्ट्र में अब मुख्यमंत्री बीजेपी का ही होगा।



वरिष्ठ पत्रकार समर खडस का मानना है कि देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। “अगर देवेंद्र फडणवीस को सीएम नहीं बनाया जाता है, तो उन्हें बीजेपी का अध्यक्ष बनाया जा सकता है। ऐसे में बीजेपी की अंदरूनी राजनीति में देवेंद्र फडणवीस मजबूत हो जाएंगे।”

जानकारों के मुताबिक देवेंद्र फडणवीस को एक तरफ जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करीबी माना जाता है, वहीं दूसरी तरफ अमित शाह से उनके रिश्ते बहुत बेहतर नहीं हैं। ऐसे में विश्लेषक ये मान रहे हैं कि महाराष्ट्र की ये बड़ी जीत बीजेपी की अंदरूनी राजनीति को भी प्रभावित कर सकती है। समर खडस कहते हैं, “देवेंद्र फडणवीस का परिश्रम और उनकी रणनीति का असर इन नतीजों में साफ़ दिखा है।” “बीजेपी की अंदरूनी राजनीति में देवेंद्र फडणवीस, अमित शाह के चलते कमजोर हो गए थे, लेकिन इन नतीजों के बाद अब देवेंद्र फडणवीस पहले से मजबूत हुए हैं। उनकी भूमिका आगे अहम हो जाएगी।”

महाराष्ट्र की हार ने इंडिया गठबंधन के लिए स्थिति को बेहद मुश्किल कर दिया है और गठबंधन के सामने सभी दलों को साथ रखने की चुनौती भी आ सकती है।

शरद पवार और उद्धव ठाकरे की पार्टी का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र से उद्धव ठाकरे की शिवसेना के 9 और शरद पवार की एनसीपी के 8 सांसद जीते थे।

लेकिन, विधानसभा चुनाव के नतीजों ने दोनों ही नेताओं की पार्टियों को बेहद कमजोर स्थिति में ला दिया है। ऐसे में इन दलों के लिए अपने सांसदों को साथ बनाए रखने की भी चुनौती होगी।

समर खडस कहते हैं, “शरद पवार ने अपनी पार्टी के कांग्रेस में विलय के संकेत दिए थे, अब आगे ये संभावना बन सकती है।” “अगर राजनीति आगे और कोई करवट लेती है तो उद्धव ठाकरे के लिए अपने सांसदों को साथ बनाए रखना आसान नहीं होगा।” अगले कुछ महीनों में दिल्ली में विधानसभा चुनाव होना है। साथ ही अगले साल अक्टूबर में बिहार में चुनाव होंगे।

महाराष्ट्र की हार ने इंडिया गठबंधन के लिए स्थिति को बेहद मुश्किल कर दिया है और गठबंधन के सामने

सभी दलों को साथ रखने की चुनौती भी आ सकती है। दिल्ली में बीजेपी अकेले अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। यहां उसे गठबंधन सहयोगी की जरूरत नहीं है। लेकिन, विश्लेषक मान रहे हैं कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के लिए साथ आना राजनीतिक मजबूरी हो सकता है।

सीएसडीएस के निदेशक संजय कुमार कहते हैं, “अगर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी साथ नहीं आते हैं, तो इसका निश्चित रूप से बीजेपी को फायदा मिलेगा।” “राजनीतिक नजरिए से देखें, तो दोनों दलों को साथ आना ही चाहिए। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और आप साथ मिलकर लड़ें थे, लेकिन सातों सीटें हार गए।” “दिल्ली की जनता के लिए लोकसभा चुनाव के मायने अलग हैं और विधानसभा चुनाव के मायने अलग हैं।” बीजेपी पर ये आरोप लगते रहे हैं कि वह अपने गठबंधन सहयोगियों की राजनीतिक जमीन खींच लेती है। लेकिन, विश्लेषक मान रहे हैं कि अब बीजेपी ये संकेत दे रही है कि उसके लिए गठबंधन सहयोगी अहम हैं, भले ही वह सबसे बड़ी पार्टी क्यों ना हो।

संजय कुमार कहते हैं, “बीजेपी इन चुनावों के नतीजों के बाद आत्मविश्वास से भरी हुई है। बड़ी जीत के बावजूद संकेत साफ़ है कि बीजेपी अपने गठबंधन सहयोगियों को साथ लेकर चलना चाहती है।” “बीजेपी पर ये आरोप लगाया जाता है कि वह गठबंधन सहयोगियों का इस्तेमाल करके छोड़ देती है। ऐसे में बीजेपी इस धारणा को तोड़ना चाहेगी।” “अगले साल बिहार में होने वाले विधानसभा चुनावों में बीजेपी के लिए गठबंधन को बनाए रखना अहम होगा।”

जानकार का कहना है कि इंडिया गठबंधन के दल सीटों के बंटवारे को लेकर उलझे रहते हैं और चुनाव बेहद करीब आने तक कोई स्पष्ट रणनीति पेश नहीं कर पाते हैं। विश्लेषक ये भी मान रहे हैं कि इन चुनाव नतीजों ने इंडिया गठबंधन की अंदरूनी कमजोरियों को एक बार फिर उजागर कर दिया है।

शरद गुप्ता कहते हैं, “माना जा रहा था कि इंडिया गठबंधन एक मजबूत फ्रंट पेश करेगा, उसकी संभावना अब कमजोर हो गई है।” “महाराष्ट्र के नतीजों के बाद ये धारणा मजबूत हुई है कि इंडिया गठबंधन सहयोगी

आपसी विवाद में उलझे रहते हैं और मजबूत विकल्प पेश नहीं कर पाते।”

“इंडिया गठबंधन के दल सीटों के बंटवारे को लेकर उलझे रहते हैं और चुनाव बेहद करीब आने तक कोई स्पष्ट रणनीति पेश नहीं कर पाते हैं।”

वहीं, कांग्रेस को लग रहा है कि महाराष्ट्र चुनाव नतीजों का एक संकेत ये भी है कि बीजेपी में केंद्रीय नेतृत्व कमजोर हो रहा है और क्षेत्रीय क्षत्रप उभर रहे हैं। कांग्रेस प्रवक्ता रागिनी नायक महाराष्ट्र में मिली अप्रत्याशित हार पर कहती हैं, “महाराष्ट्र के नतीजे हैरान करने वाले हैं, जो जमीनी हकीकत हमें समझ आ रही थी नतीजे उससे बिलकुल अलग हैं।” “लेकिन इन नतीजों का ये संकेत भी है कि बीजेपी में केंद्रीय नेतृत्व के मुकाबले क्षेत्रीय नेता मजबूत हो रहे हैं।”

“लोकसभा चुनावों में बीजेपी प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ी और अपने हिस्से की 28 सीटों पर लड़कर 19 सीटों पर हार गई।” “लेकिन, अब जब देवेंद्र फडणवीस, एकनाथ शिंदे और अजित पवार चेहरा थे, तब प्रचंड बहुमत मिला है।” महाराष्ट्र चुनावों से पहले ‘एक हैं तो सेफ हैं’ और ‘बंटेंगे तो कटेंगे’ जैसे नारे दिए गए।

यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ‘बंटेंगे तो कटेंगे’ जैसे नारे देकर हिंदुत्व की राजनीति को और धार देने की कोशिश की। विश्लेषक मान रहे हैं कि इन चुनाव नतीजों का एक स्पष्ट संकेत ये भी है कि महाराष्ट्र में वोटों का ध्रुवीकरण हुआ और हिंदुत्व की राजनीति और मजबूत हुई है।

हालांकि, अजित पवार समेत महायुक्ति के कई नेताओं ने ‘बंटेंगे तो कटेंगे’ जैसे नारे को खारिज भी किया। विश्लेषक मानते हैं कि बीजेपी महाराष्ट्र जैसे राज्य में नियंत्रित सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने में कामयाब रही। समर खडस कहते हैं, “बंटेंगे तो कटेंगे, एक हैं तो सेफ हैं और वोट जिहाद जैसे नारों से एक तरफ बीजेपी ने नियंत्रित सांप्रदायिकता फैलाई, वहीं दूसरी तरफ अजित पवार जैसे गठबंधन सहयोगियों ने खुद को ऐसे नारों से दूर रख अपने समर्थकों के वोट हासिल किए।”

ट्रंप के झटके को कैसे झेलेंगे एशियाई बाजार

अगर अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप चीन पर भारी टैरिफ लगाने के अपने वादे को पूरा करते हैं, तो कुछ एशियाई देशों को फायदा हो सकता है। ट्रंप के पहले कार्यकाल में भी कुछ एशियाई देशों को काफी लाभ मिला था। जनवरी में अमेरिका के नए राष्ट्रपति बनने जा रहे डॉनल्ड ट्रंप ने आयात पर भारी टैक्स लगाने का वादा किया है। इसमें चीन को खासतौर पर निशाना बनाया जा सकता है। अगर वह इस वादे को पूरा करते हैं तो भारत, इंडोनेशिया और वियतनाम आदि कुछ देशों को खासा फायदा हो सकता है। इसका कारण यह होगा कि कई फैक्ट्रियां चीन से हटकर एशिया के अन्य हिस्सों में स्थानांतरित हो सकती हैं।

लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार युद्ध से वैश्विक बाजार अस्थिर हो जाएगा, और इसका सबसे बड़ा असर भी एशिया पर ही पड़ेगा, जो वैश्विक विकास में सबसे ज्यादा योगदान देता है। ट्रंप ने जोरदार बहुमत के साथ राष्ट्रपति चुनाव जीता है। उन्होंने अपने प्रचार के दौरान वादा किया था कि वह चीन से अमेरिका आने वाले सभी सामानों पर 60 प्रतिशत टैरिफ लगाएंगे, ताकि दोनों देशों के बीच व्यापार संतुलन स्थापित हो सके। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि नए राष्ट्रपति शायद इतनी ऊंची दर पर टिके नहीं रहेंगे। फिर भी, अगर ऐसा होता है तो इससे चीन की जीडीपी में 0.17 प्रतिशत से 1.16 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। इसका कुछ असर दक्षिण-पूर्व एशिया में भी महसूस किया जाएगा, जहां की उत्पादन क्षमता सीधे चीन से जुड़ी हुई है और चीन का अच्छा खासा निवेश है।

ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स के एडम अहमद समादीन के अनुसार, “चीन पर टैरिफ बढ़ने के कारण अमेरिकी मांग में कमी से आसियान देशों के निर्यात पर भी असर पड़ेगा, भले ही इन देशों पर सीधे अमेरिकी टैरिफ न लगे हों।”

इंडोनेशिया विशेष रूप से संवेदनशील है, क्योंकि इसके खनिजों के निर्यात पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा जापान, ताइवान और दक्षिण कोरिया भी प्रभावित होंगे, जहां चीन सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। ट्रंप ने यह भी चेतावनी दी है कि वह सभी आयातों पर 10 से 20 प्रतिशत तक की दर से टैरिफ बढ़ा सकते हैं। यह उनकी संरक्षणवादी नीतियों का हिस्सा है क्योंकि उनका मानना है कि अन्य देश अमेरिका का फायदा उठा रहे हैं।

समादीन के अनुसार, “इन प्रभावों का दायरा इस पर निर्भर करेगा कि हर देश की अर्थव्यवस्था का अमेरिकी बाजार से कितना सीधा संपर्क है।” उन्होंने कहा कि अमेरिका कंबोडिया के 3.91 प्रतिशत, वियतनाम के 2.74 प्रतिशत, थाईलैंड के 1.7 प्रतिशत और फिलीपींस के 1.54 प्रतिशत निर्यात का हिस्सा है।

चुनाव से पहले ही चीनी निर्यातकों में खलबली मची हुई थी। ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में 2018 में चीन पर भारी टैरिफ लगाए थे, जिससे “कनेक्टर देशों” का उभरना हुआ। इन देशों के जरिए चीनी कंपनियों ने अपने उत्पादों को अमेरिकी टैक्स से बचाते हुए भेजा। अब ऐसे देशों पर भी खतरा मंडरा रहा है।

जापान के सबसे बड़े बैंक मित्सुबिशी यूएफजी फाइनेंशियल ग्रुप (एमयूएफजी) के वरिष्ठ विश्लेषक लॉयड चान ने कहा, “वियतनाम के इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात भी ट्रंप के निशाने पर हो सकते हैं, ताकि चीन के इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के वियतनाम के जरिए अमेरिकी बाजार में प्रवेश को रोका जा सके।” उन्होंने कहा, “यह असंभव नहीं है। व्यापार का पुनर्गठन खासकर इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में तेजी से हो रहा है।”

भारत पर असर

ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में भारत और अमेरिका के सुरक्षा संबंध पहले की तरह ही बने रहने की संभावना है। हालांकि, कारोबारी संबंधों के बारे में ऐसा अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। विदेश नीति विशेषज्ञ सी राजा मोहन का मानना है कि ट्रंप की ‘अमेरिका फर्स्ट’ नीति के कारण भारत से निर्यात की जाने वाली चीजों पर टैरिफ बढ़ सकता है। इससे आईटी, दवा और कपड़ा क्षेत्र पर खास तौर पर असर पड़ेगा।

ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स की अर्थशास्त्री एलेक्जेंड्रा हरमन का मानना है कि भारतीय उत्पादों में चीनी हिस्सेदारी के कारण भारत भी ट्रंप के संरक्षणवादी उपायों का शिकार हो सकता है। नई दिल्ली स्थित ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के अजय श्रीवास्तव ने बताया कि ट्रंप भारत के ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, फार्मास्यूटिकल्स और वाइन सेक्टर पर ऊंचे टैरिफ लगा सकते हैं, जिससे भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में महंगे हो सकते हैं।

फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन के निदेशक अजय सहाय का कहना है कि यह व्यापार युद्ध भारत के लिए खतरनाक हो सकता है। उन्होंने कहा, “ट्रंप एक सौदेबाज व्यक्ति हैं। वह भारत के कुछ उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाकर अमेरिकी उत्पादों के लिए भारत में टैरिफ कम करने की मांग कर सकते हैं।” मध्यम अवधि में, इन नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए चीन के बाहर फैक्ट्रियां स्थापित की जा सकती हैं, ताकि नुकसान से बचा जा सके। “चीन+1” रणनीति के कारण ट्रंप के पहले कार्यकाल में चीन

की फैक्ट्रियां बड़े पैमाने पर भारत, मलेशिया, थाईलैंड और वियतनाम में चली गई थीं।

वियतनाम को फायदा

वियतनाम अपनी भौगोलिक स्थिति और सस्ते कुशल श्रम के कारण पहले से ही इस रणनीति का लाभ उठा रहा है। वहां एप्पल की सहयोगी निर्माता कंपनी फॉक्सकॉन और पेगाट्रॉन और दक्षिण कोरिया की सैमसंग का निवेश है, जिससे यह चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा स्मार्टफोन निर्यातक बन गया है।

यूरोपीय चैंबर ऑफ कॉमर्स इन वियतनाम के चेयरमैन ब्रूनो यास्पर्ट ने कहा, “यह संभावना बढ़ती है कि और अधिक कंपनियां चीन के बाहर दूसरा या तीसरा उत्पादन बेस स्थापित करना चाहेंगी।”

चीनी कंपनियां भी वियतनाम से लेकर इंडोनेशिया तक बड़े पैमाने पर निवेश कर रही हैं, खासकर सोलर, बैटरी, इलेक्ट्रिक गाड़ियों और खनिज क्षेत्रों में। हनोई स्थित अमेरिकी चैंबर ऑफ कॉमर्स के कार्यकारी निदेशक एडम सिट्कोफ ने कहा, “अमेरिकी कंपनियां और निवेशक वियतनाम में अवसरों को लेकर काफी उत्साहित हैं और यह रुचि ट्रंप प्रशासन में भी जारी रहेगी।”



अलका तिवारी राज्य की नई सीएस

भा रतीय प्रशासनिक सेवा की 1988 बैच की अधिकारी अलका तिवारी झारखंड की नई मुख्य सचिव बनाई गई हैं। मुख्य सचिव एल.खियांगते के 31 अक्टूबर को रिटायर होने के बाद अलका तिवारी को ये महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। आईएएस अलका तिवारी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से मुक्त होने के बाद वापस झारखंड आई हैं। वर्तमान अपर मुख्य सचिव में सबसे वरिय होने के कारण अलका तिवारी को ये जिम्मेदारी सौंपी गई है। 1988 बैच की आईएएस अधिकारी अलका तिवारी को 15 अक्टूबर को ही केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से विमुक्त किया गया था।

अलका तिवारी ने कई महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी संभाली : नवनियुक्त मुख्य सचिव अलका तिवारी केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार के रूप में काम कर चुकी हैं। इसके अलावा जनजाति आयोग के सचिव के रूप में भी काम कर चुकी हैं। अलका तिवारी 30 सितंबर 2025 को रिटायर होंगी, ऐसे में वो भी करीब 11 महीने तक मुख्य सचिव के पद पर काम कर सकती हैं।

अलका तिवारी 30 सितंबर 2025 को रिटायर होंगी, ऐसे में वो भी करीब 11 महीने तक सीएस के पद पर काम कर सकती हैं

अलका तिवारी झारखंड राज्य में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन और बेदाग ईमानदारी के लिए जानी जाती हैं। उन्हें उनकी सरलता, सादगी, कार्यकुशलता और कड़ी मेहनत के लिए बहुत सम्मान दिया जाता है। उन्हें आईएएस अधिकारी के लिए एक आदर्श माना जाता है।

अलका तिवारी मेरठ विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर हैं और उन्हें टॉपर होने के लिए राज्यपाल का स्वर्ण पदक मिला है। उन्होंने मैनेजमेंट विश्वविद्यालय, यू.के. के सिविल और स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग विभाग से एमएससी. किया, 'विकास परियोजनाओं के प्रबंधन और कार्यान्वयन' में पाठ्यक्रम में शीर्ष स्थान प्राप्त किया और स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वह रांची विश्वविद्यालय से कानून स्नातक भी हैं। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए से 'वित्तीय समावेशन पर पुनर्विचार' पर एक अल्पकालिक पाठ्यक्रम और ड्यूक विश्वविद्यालय, यूएसए से 'वित्तीय सलाहकारों के लिए सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन' पर एक और विशेष पाठ्यक्रम पूरा किया है।

अलका झारखंड के गुमला और लोहरदगा जिलों में डीसी के पद पर कार्यरत रही हैं। वे वाणिज्यिक कर और वन एवं पर्यावरण विभागों में सचिव रह चुकी हैं। वे भारत सरकार के नीति आयोग में सलाहकार, उर्वरक विभाग में संयुक्त सचिव और अतिरिक्त सचिव तथा उर्वरक, रसायन और औषधि विभागों में अतिरिक्त सचिव सह वित्तीय सलाहकार रह चुकी हैं। नीति आयोग में वे वित्तीय संसाधन, शिक्षा, पर्यटन आदि जैसे महत्वपूर्ण विभागों



को संभाल रही थीं। उन्होंने भारत के उच्च शिक्षा नियामक ढांचे में सुधार और शिक्षण एवं अनुसंधान के विश्व स्तरीय संस्थानों के विकास के लिए रणनीति दस्तावेज विकसित किए। उर्वरक कंपनी एफएजीएमआईएल में सीएमडी के रूप में उन्होंने जिप्सम व्यापार में गिरावट को उलट दिया और इसे लाभ कमाने वाली बाजार अग्रणी कंपनी में बदल दिया।

अलका तिवारी ने यूरिया की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने और देश के राजस्व हितों की रक्षा के लिए कतर, ईरान और रूस के साथ संपर्क बनाए रखा। उन्होंने व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी

और सांस्कृतिक सहयोग पर भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग के तहत 'आधुनिकीकरण और औद्योगिक सहयोग' पर प्रोटोकॉल समझौते पर हस्ताक्षर किए।

अलका तिवारी ने तीन साल से अधिक समय तक राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग में भारत सरकार के सचिव के रूप में काम किया और देश के आदिवासी मुद्दों पर विशेषज्ञता हासिल की। उनके पति डॉ. डी. के। तिवारी 1986 बैच के आईएएस अधिकारी हैं, जो झारखंड के मुख्य सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं और अब राज्य चुनाव आयुक्त के संवैधानिक पद पर कार्यरत हैं।

आईआईटी-आईएसएम धनबाद से पंजाब के सीएस तक का सफर

आ आईआईटी धनबाद के पूर्व छात्र केएपी सिन्हा ने पंजाब के नए मुख्य सचिव का पद संभाला है। 1989 बैच के आईआईटीयन सिन्हा ने अपने अल्मा मेटर से माइनिंग इंजीनियरिंग में बीटेक किया है। 1992 बैच के आईएसएम अधिकारी केएपी सिन्हा बिहार के रहने वाले हैं।

आईएसएम केपीए सिन्हा इससे पहले विशेष मुख्य सचिव (विकास), वित्त आयुक्त (राजस्व) के रूप में कार्यरत थे। इससे पहले, उन्होंने वित्त, कर, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, उच्च शिक्षा, पर्यावरण और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संसदीय मामले, सामान्य प्रशासन जैसे महत्वपूर्ण विभागों का कार्यभार संभाला है।

केएपी सिन्हा ने भारत सरकार में विदेश मंत्रालय, उद्योग और वाणिज्य, परमाणु ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों में भी सेवाएं दी हैं। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी भाग लिया है। पंजाब में फील्ड पोस्टिंग के दौरान सिन्हा ने बटिंडा और गुरदासपुर के उपायुक्त के रूप में भी सेवाएं दी हैं।

आईआईटी-आईएसएम से बीटेक की डिग्री हासिल की : केएपी सिन्हा ने धनबाद के आईआईटी आईएसएम से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर, एलएलएम और बीटेक (खनन इंजीनियरिंग) की डिग्री प्राप्त की है। आईआईटी धनबाद के शिक्षकों और छात्रों ने सिन्हा की इस उपलब्धि पर खुशी जताई है।

पैतृक गांव के ही स्कूल में प्रारंभिक शिक्षा : नालंदा जिले के हिलसा प्रखंड के इंदौर गांव निवासी कुमार अनुग्रह प्रसाद सिन्हा (केएपी सिन्हा) की प्रारंभिक शिक्षा गांव के लिए सरकारी स्कूलों में हुई। केएपी सिन्हा के छोटे भाई कुमार प्रवीण शंकर अभी कोलकाता में लफार्ज सीमेंट कंपनी में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि उनके बड़े भाई केएपी सिन्हा ने गांव के स्कूल में प्रारंभिक शिक्षा हासिल करने के बाद हिलसा के रामबाबू हाईस्कूल से वर्ष 1982 में मैट्रिक परीक्षा पास की। इसके बाद एसयू कॉलेज हिलसा से ही 1984 में इंटर की परीक्षा पास की। इसी दौरान इंडियन स्कूल ऑफ माइंस (आईएसएम) धनबाद में उनका चयन हुआ।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान यूपीएससी की तैयारी : इंजीनियरिंग के बाद संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी करने लगे। बिना कोचिंग खुद की मेहनत की बढौलत तीसरे चांस में यूपीएससी की परीक्षा पास की। सबसे पहले जालंधर के एसडीएम बनाये गये थे। गुरदासपुर और अम्बाला के डीएम बनाये गये थे। कुछ साल के लिए केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति पर विदेश मंत्रालय में रहे। इस दौरान राजगीर में स्थापित किया जा रहा अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना में भरपूर मदद की। उनके दो पुत्र शिवम कुमार और क्षितिज कुमार, तो एक लड़की रिया कुमारी है।



प्रमोद अग्रवाल ने बीएसई चेयरमैन पद से दिया इस्तीफा

बीएसई के चेयरमैन और पब्लिक इंटरस्ट डायरेक्टर प्रमोद अग्रवाल ने 8 नवंबर, 2024 से अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। कोल इंडिया में चेयरमैन के पद पर काम कर चुके प्रमोद अग्रवाल ने अचानक पद छोड़ दिया। हालांकि आधिकारिक विज्ञप्ति और बीएसई फाइलिंग के अनुसार उनके इस्तीफे के पीछे का कारण एक नया कार्यभार है। उन्हें पांच साल के कार्यकाल के लिए टाटा स्टील में अतिरिक्त निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है। अपने इस्तीफे में अग्रवाल ने कहा कि उन्हें जो नया कार्यभार मिला है, उसके साथ संभावित टकराव के कारण उन्होंने बीएसई चेयरमैन के रूप में अपना पद तत्काल प्रभाव से छोड़ दिया है। उन्होंने अपने इस्तीफे के लिए कोई अन्य भौतिक कारण भी नहीं बताया। वर्तमान में, उन्हें पांच साल के कार्यकाल के लिए टाटा स्टील में अतिरिक्त निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है। यहां बताना होगा कि जनवरी 2024 में भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) ने कोल इंडिया के पूर्व प्रमुख प्रमोद अग्रवाल को बीएसई के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने के लिए अपनी मंजूरी दे दी थी।



कोल इंडिया लिमिटेड ने मनाया 50वां स्थापना दिवस



मंत्री रेड्डी ने स्वर्ण जयंती लोगो का शुभारंभ किया और शुभंकर “अंगारा” का अनावरण किया। यह लोगो भारत के ऊर्जा क्षेत्र की रीढ़ के रूप में सीआईएल की भूमिका का प्रतीक है।

बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, नीलामी के माध्यम से कोयला खदानों के पारदर्शी आवंटन के माध्यम से कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए 2015 में कोयला खान विशेष प्रावधान (सीएमएसपी) अधिनियम लागू किया गया था। यह पहल स्टील, सीमेंट और बिजली उपयोगिताओं जैसे क्षेत्रों के लिए कोयले की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने आगे

कहा कि 2020 में वाणिज्यिक कोयला खनन की शुरुआत ने पारदर्शिता, व्यापार करने में आसानी और निवेश के अवसरों की शुरुआत की, जिससे कोयला क्षेत्र को खोलने में मदद मिली। सीआईएल में विश्वास व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि कंपनी के पास मौजूदा खुले बाजार परिदृश्य में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता और प्रतिबद्धता है। मंत्री ने दोहराया कि आने वाले दशकों में कोयला भारत के ऊर्जा परिदृश्य का एक केंद्रीय घटक बना रहेगा, लेकिन देश अक्षय ऊर्जा में भी भारी निवेश कर रहा है और जलवायु परिवर्तन से निपट रहा है।

उन्होंने सीआईएल के विविधीकरण प्रयासों की सराहना की, जिसमें एक थर्मल पावर प्लांट की स्थापना और महत्वपूर्ण खनिज अधिग्रहण में प्रवेश करना शामिल है। विकसित भारत पहल में, कोल इंडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है और उसे यह जिम्मेदारी उठानी होगी। कोयला सचिव, विक्रम देव दत्त ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सीआईएल आयातित कोयले की तुलना में प्रतिस्पर्धी दरों पर भारतीय उपभोक्ताओं को कोयला उपलब्ध कराता है। उन्होंने कहा कि 28 नवंबर, 2024 तक बिजली संयंत्रों में कोयले का स्टॉक 3116 मीट्रिक टन तक पहुंच गया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 1818 मीट्रिक टन था, जो 68% की वृद्धि के साथ काफी हद तक सीआईएल के योगदान के कारण है। कोयला सचिव ने यह भी कहा कि कोल इंडिया को बदलती व्यावसायिक गतिशीलता के अनुसार अपनी प्रक्रियाओं, परिचालन और लागत दक्षता को फिर से जांचना चाहिए।

कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने कोलकाता स्थित अपने मुख्यालय में अपना 50वां स्थापना दिवस मनाया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी। किशन रेड्डी और विशिष्ट अतिथि के रूप में कोयला मंत्रालय के सचिव विक्रम देव दत्त उपस्थित थे। मंत्री रेड्डी ने स्वर्ण जयंती लोगो का शुभारंभ किया और शुभंकर “अंगारा” का अनावरण किया। यह लोगो भारत के ऊर्जा क्षेत्र की रीढ़ के रूप में सीआईएल की महत्वपूर्ण भूमिका का प्रतीक है, जो नवाचार, प्रगति और स्थिरता के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विज्ञापन शुभंकर कोयला खनिकों की ताकत और लचीलेपन का प्रतीक है, जो उनके साहस और समर्पण को दर्शाता है। शुभंकर

रॉयल बंगाल टाइगर से प्रेरित है। अपने संबोधन के दौरान जी। किशन रेड्डी ने कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के अधिकारियों, कर्मचारियों और श्रमिकों को 50 वर्ष पूरे होने पर हार्दिक बधाई दी और इस बात पर जोर दिया कि कोयला उत्पादन बढ़ाना और आयात कम करने के लिए आपूर्ति बढ़ाना सीआईएल की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

उन्होंने खनिकों के कल्याण और खदान बंद होने से प्रभावित समुदायों के पुनर्वास के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, “कोल इंडिया के उत्पादन में संविदा कर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका है और मैं उनके लिए प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहन को लागू करने के प्रबंधन के फैसले की सराहना करता हूँ, जो वित्त वर्ष 2023-24 से प्रभावी है।” मंत्री ने



राष्ट्रीयकरण से पहले 70 मिलियन टन उत्पादन, अब 720 मिलियन टन

राष्ट्रीयकरण से पूर्व जहाँ कोल इंडिया में 70 मिलियन टन कोयले का उत्पादन होता था। वह वर्तमान में बढ़कर 720 लियन टन (2022-23) हो गया। इसमें आधा से ज्यादा उत्पादन आउटसोर्स से किया जा रहा है। आगामी 2025 तक कोल इंडिया का उत्पादन लक्ष्य 1 बिलियन टन रखा गया है। पब्लिक सेक्टर के क्षेत्र में आज कोल इंडिया पूरे विश्व में सबसे ज्यादा कोयला उत्पादन करने वाला कंपनी है।

ऊर्जा के क्षेत्र में 81 फीसदी उत्पादन

पूरे देश में अपने उत्पादन का 81 फीसदी योगदान ऊर्जा के क्षेत्र में दे रहा है। कोल इंडिया में भारत सरकार का 90 फीसदी शेयर है तथा यह कंपनी कोयला मंत्रालय, भारत सरकार से ऑपरेट होता है। अप्रैल 2011 में भारत सरकार ने कोल इंडिया को महारत्न कंपनी का दर्जा दिया था। भारत के आर्थिक बाजार में आज कोल इंडिया पांचवां सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कंपनी बन गया है। भारत में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए 70 के दशक में कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया गया। राष्ट्रीयकरण से पूर्व प्राइवेट खानगी मालिक काफी खराब तरीके से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहे थे। राष्ट्रीयकरण के बाद काफी साइंटिफिक (वैज्ञानिक) तरीके से देश के मांग के मुताबिक कोयला खनन शुरू हुआ।

दो चरणों में हुआ कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण

1970 के दशक में देश की प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी ने दो चरणों में पूर्व प्रधानमंत्री स्व इंदिरा

गांधी जी ने कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया था। 1972 में 226 कोकिंग कोल माइंस का (बीसीसीएल से) तथा 711 नन-कोकिंग कोल माइंस का (कोल माइंस अथॉरिटी लि.) से राष्ट्रीयकरण किया गया। 1 नवंबर 1975 को कोल इंडिया का (सीआईएल) गठन किया गया। 1975 से 2010 तक कोल इंडिया में भारत सरकार की सौ फीसदी साझेदारी हो गयी। नवंबर 2010 में कोल इंडिया ने प्रति शेयर 245 रुपये की दर से 10 फीसदी शेयर बेचकर 24 हजार करोड़ रुपया अर्जित किया। यह आईपीओ में भारत का दूसरा सबसे बड़ा कलेक्शन था। इसके बाद 2014-15 में और 10 फीसदी शेयर बेच कर सरकार ने करीब 20 हजार करोड़ रुपये अर्जित किये। अभी तक कोल इंडिया में कुल 32 फीसदी विनिवेश किया जा चुका है। कोल इंडिया का फिलहाल आठ राज्यों में 81 माइनिंग एरिया है। राष्ट्रीयकरण के वक्त कोल इंडिया में 937 कोल माइंस थीं। वर्तमान में लगभग 354 ओसी व यूजी माइंस है। कोल इंडिया में कुल 17 कोल वाशरी भी है। जिसमें 12 कोकिंग कोल वाशरी तथा 05 नन-कोकिंग कोल वाशरी है। इसमें 5-6 वाशरियां बंद हो गई है। कोल इंडिया में करीब 200 अन्य एस्टेब्लिशमेंट है जिसमें वर्कशॉप तथा अस्पताल शामिल है।

मैन पावर

राष्ट्रीयकरण के वक्त कोल इंडिया का मैन पावर सात लाख हुआ करता था। आज की तारीख में मैन पावर घटकर 2.32 लाख पर आ गया है। वहीं आउटसोर्स में काम करने वाले ठेका मजदूरों की भी संख्या लगभग पौने तीन लाख के आसपास है।

रानीगंज से शुरू हुआ था उत्पादन

भारत में कोयला खनन का इतिहास काफी पुराना है। ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1774 में दामोदर नदी के पश्चिमी किनारे रानीगंज में कोयले का वाणिज्यिक खनन शुरू किया। वर्ष 1953 में भाप से चलने वाली गाड़ियों के शुरू होने से कोयले की मांग बढ़ी। इसके बाद कोयला का उत्पादन लगभग एक मिलियन मीट्रिक टन सालाना हो गया। 1942 तक सालाना उत्पादन मिलियन मीट्रिक टन, 1946 तक 30 मिलियन मीट्रिक टन हो गया। राष्ट्रीयकरण के समय 1972-73 में उत्पादन बढ़कर सालाना 74 मिलियन मीट्रिक टन हो गया। कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के के बाद जब 01.01.1975 को पहली बार कोयला मजदूरों के लिए एनसीडब्ल्यूए-1 का एग्रीमेंट हुआ। उस समय कैटेगरी वन के मजदूरों का प्रति माह का बेसिक मात्र 260 रुपये था। जबकि एनसीडब्ल्यूए-10 के एग्रीमेंट के अनुसार कैटेगरी-वन के मजदूरों का बेसिक प्रतिमाह 26,292 रुपये है। श्रमिक संगठन नेताओं का कहना है कि कोल इंडिया पुनः निजीकरण की ओर जा रहा है। कोल इंडिया का विनिवेश कमर्शियल माइनिंग जारी है। तेज गति से आउटसोर्सिंग व एमडीओ शुरू है। 162 कोल माइंस, सीएचपी व वाशरी को लीज पर निजी मालिकों का दिये जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। आज कोल इंडिया के सार्वजनिक स्वरूप को बचाये रखने का सवाल है। वर्ष 2025 तक एक बिलियन टन उत्पादन के लिए 20 हजार हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता पड़ेगी। कोल इंडिया के पास उसका अपना रिजर्व लगभग 62 हजार करोड़ रुपया केंद्र सरकार ने ले लिया है।

एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड मुख्यालय ने 50वां एनटीपीसी स्थापना दिवस मनाया

ए नटीपीसी माइनिंग लिमिटेड मुख्यालय, रांची ने एनटीपीसी का 50वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्री अनिमेष जैन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एनएमएल और क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (कोयला खनन) ने एनटीपीसी ध्वज फहराया। इस अवसर पर, श्री जैन ने कर्मचारियों को विद्युत उत्पादन में एनटीपीसी की 50 वर्ष की यात्रा शुरू करने के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर बोलते हुए, श्री जैन ने कहा, “एनटीपीसी के कर्मचारियों के लिए यह बहुत गर्व और खुशी का दिन है। पचास साल की यात्रा - कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। 7 नवंबर, 1975 को, एनटीपीसी ने ऊर्जा क्षेत्र में अपना पहला कदम रखा और तब से यह एक लंबा सफर तय कर चुका है। पिछले 50 साल समर्पण, कड़ी मेहनत और कर्मचारियों और सहयोगियों के योगदान की कहानी रहे हैं। संगठन ने कठिनाइयों का सामना किया, नए अवसरों का स्वागत किया और हर बार मजबूत होकर उभरा।” सिंगरौली में स्थापित 200 मेगावाट की अपनी पहली थर्मल पावर यूनिट से लेकर, एनटीपीसी अब 76+ गीगावाट ऊर्जा कंपनी बन गई है, जो देश में हर चौथा बल्ब जला रही है और बिजली की विश्वसनीय, सस्ती आपूर्ति सुनिश्चित कर रही है।”

“ पिछले कुछ दशकों में एनटीपीसी ने अपनी क्षमता और पोर्टफोलियो का काफी विस्तार किया है, जिसमें खनन और सौर और पवन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को शामिल करना शामिल है। कंपनी दक्षता बढ़ाने और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए अभिनव तकनीकों को अपनाने में भी सबसे आगे रही है, भारत की सबसे बड़ी बिजली उपयोगिता कंपनी एनटीपीसी ने 6% की वृद्धि के साथ वित्त वर्ष 2024 में 76,475.68 मेगावाट की स्थापित क्षमता और 422 बीयू का रिकॉर्ड उत्पादन के साथ प्रभावशाली वृद्धि हासिल की है। कंपनी अपने कोयला स्टेशनों के लिए 7713% पीएलएफ में अग्रणी है। एनटीपीसी स्वच्छ ऊर्जा पर केंद्रित है, जिसका लक्ष्य 2032 तक 60 गीगावाट से अधिक नवीकरणीय क्षमता हासिल करना और कुल क्षमता को 130 गीगावाट+ तक बढ़ाना है।” श्री जैन ने कहा एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड (एनएमएल) पर बोलते हुए श्री जैन ने कहा कि “ आत्मनिर्भरता के लिए खनन “ के आदर्श के साथ, एनटीपीसी ने अपनी बिजली परियोजनाओं को ईंधन देने के लिए कोयला उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। वित्त वर्ष 2023-24 में, कोयला उत्पादन में 48% की वृद्धि हुई, जबकि कोयला प्रेषण में 55% की वृद्धि



हुई, जिससे 34.39 मिलियन मीट्रिक टन कोयले का उत्पादन हुआ, जो एनटीपीसी की कुल आवश्यकता का 13% था और चालू वित्त वर्ष में एनटीपीसी अपने बिजली स्टेशनों से 15% कोयला आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास कर रहा है।

अपनी 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर, एनटीपीसी माइनिंग का लक्ष्य 50 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक कोयला उत्पादन करना है, तथा भविष्य में 100 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक उत्पादन करने वाली कंपनी बनने का लक्ष्य है। सुरक्षा एनटीपीसी के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है और यह एक मुख्य मूल्य बना हुआ है, एनटीपीसी माइनिंग ने सुरक्षा पुरस्कार जीते हैं, जिसमें पकरी बरवाडीह माइंस के लिए डीजीएमएस माइंस सेफ्टी अवार्ड-2024 और दुलंगा और तलाईपल्ली माइंस के लिए 5-स्टार रेटिंग

शामिल हैं। श्री जैन ने कहा कि कंपनी ने जून 2024 में 3176 एमएमटी के अपने अब तक के सबसे अधिक मासिक उत्पादन और सितंबर 2024 में एक दिन में 1.37 एमएमटी कोयला प्रेषण के साथ रिकॉर्ड भी स्थापित किया है।

एनटीपीसी स्थानीय समुदायों को सहयोग देकर ऊर्जा से परे जीवन को सशक्त बना रहा है। सीएसआर कार्यक्रम के तहत, सीआईपीईटी, रांची के सहयोग से 6 महीने के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण के लिए कोयला खनन परियोजनाओं के 80 परियोजना प्रभावित व्यक्ति की सुविधा प्रदान की है। इस विशेष दिवस के अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं सहित कर्मचारियों एवं परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया गया।



नालको के वित्त वर्ष '25 के दूसरे तिमाही के परिणाम

शुद्ध लाभ वार्षिक आधार पर 415 प्रतिशत की लम्बी छलांग के साथ 1062 करोड़ पर पहुंचा

भारत सरकार, खान मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र के 'नवरत्न' लोक उद्यम नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) ने सितंबर 2024 को समाप्त तिमाही के लिए शुद्ध लाभ में 415 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान हासिल 206 करोड़ रुपये की तुलना में 1062 करोड़ रुपये है।

भुवनेश्वर में आज निदेशक मंडल की बैठक में रिकॉर्ड किए गए परिणामों के अनुसार, तिमाही के दौरान परिचालन से कंपनी की कुल आय 4001 करोड़ रुपये रही, जो वित्त वर्ष 23-24 की दूसरी तिमाही के 3044 करोड़ रुपये की तुलना में 32 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी है।

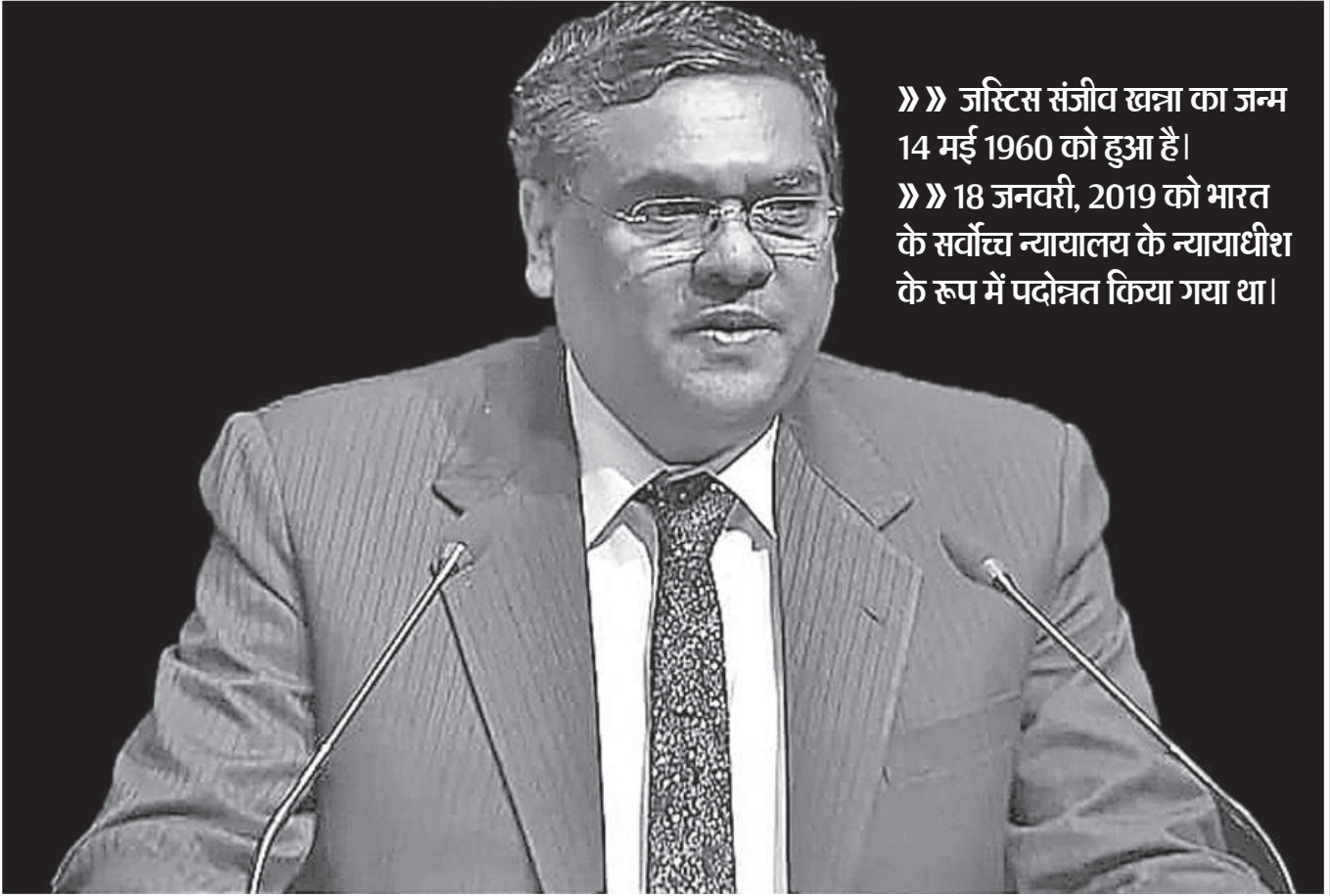
नालको ने चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में भी मजबूत प्रदर्शन किया है, जिसमें शुद्ध लाभ में 199 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो पिछले वर्ष की इसी

कंपनी ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 4 रुपये प्रति इक्विटी शेयर (5 रुपये के अंकित मूल्य पर 80%) का अंतरिम लाभांश भी घोषित किया है, जो 734165 करोड़ रुपये है

अवधि के 556 करोड़ रुपये के मुकाबले 1663 करोड़ रुपये के आकड़े पर पहुंच गई है। उल्लेखनीय है कि नालको ने वर्ष की पहली छमाही में घरेलू धातु बिक्री में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हासिल किया है, इस अवधि के दौरान 2,21,966 मीट्रिक टन की उच्चतम संचयी घरेलू धातु बिक्री दर्ज की गई है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 4 रुपये प्रति इक्विटी शेयर (5

रुपये के अंकित मूल्य पर 80%) का अंतरिम लाभांश भी घोषित किया है, जो 734165 करोड़ रुपये है। वित्त वर्ष '25 की दूसरी तिमाही के परिणाम मुख्य रूप से परिचालन दक्षता में सुधार, एल्यूमिनियम की ऊँची कीमतों के साथ-साथ सकारात्मक घरेलू कारोबारी माहौल के कारण आए।

नालको के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, श्री संजय लोहिया, भा।प्रा.से। ने कहा कि दूसरी तिमाही के परिणाम हमारे कर्मचारियों, भागीदारों और हितधारकों की कड़ी मेहनत और समर्पण और बाजार की चुनौतियों के अनुकूल होने और उनसे निपटने की सामूहिक क्षमता का प्रमाण हैं। मुझे विश्वास है कि हम मिलकर नालको की स्थिति को और मजबूत करेंगे, अधिक मूल्य सृजित करेंगे तथा आगामी तिमाहियों और उसके बाद भी असाधारण परिणाम देना जारी रखेंगे।



» » जस्टिस संजीव खन्ना का जन्म 14 मई 1960 को हुआ है।
 » » 18 जनवरी, 2019 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था।

संजीव खन्ना भारत के 51 वें मुख्य न्यायाधीश

जस्टिस संजीव खन्ना भारत के 51 वें मुख्य न्यायाधीश बनाये गए हैं। सीजेआई धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ के रिटायर होने के बाद उन्होंने

11 नवंबर को सीजेआई के पद को सुशोभित किया। जस्टिस खन्ना का मुख्य न्यायाधीश के तौर पर कार्यकाल केवल छह महीने की अवधि का होगा। सुप्रीम कोर्ट की ऑफिशियल वेबसाइट पर मौजूद जानकारी के अनुसार, वे आगामी 13 मई, 2025 को वे रिटायर हो रहे हैं। इस तरह उनका कार्यकाल केवल 6 महीने का होगा।

जस्टिस संजीव खन्ना का जन्म 14 मई 1960 को हुआ है। सीजेआई के पिता न्यायमूर्ति देव राज खन्ना भी दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे। उनकी मां सरोज खन्ना एलएसआर, डीयू में लेक्चर थीं। यहीं से उन्होंने अपनी स्कूली एजुकेशन पूरी की है। साल 1980 में दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन की डिग्री ली थी। इसके बाद, डीयू से लॉ में एडमिशन लिया था।

वकालत की पढ़ाई पूरी होने के बाद उन्होंने साल 1983 में बार काउंसिल ऑफ दिल्ली में बतौर एक वकील के रूप में इनरोल कराया था। शुरुआत में दिल्ली के तीस हजारी परिसर में प्रैक्टिस शुरू की। इसके बाद, दिल्ली के उच्च न्यायालय में विविध क्षेत्रों में न्यायाधिकरणों में अभ्यास किया था। साल 2005 में दिल्ली हाईकोर्ट में हुए थे नियुक्त: साल 2005 में दिल्ली उच्च न्यायालय के एडिशनल जज के तौर पर हुई थी। इसके बाद, साल 2006 में स्थायी न्यायाधीश बनाए गए थे।

साल 2019 में मिली सुप्रीम कोर्ट में नियुक्ति 2006 से 2019 तक हाईकोर्ट में जज का कार्यभार संभालने के बाद 18 जनवरी, 2019 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था।

विवाद में घिरी थी नियुक्ति: मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस संजीव खन्ना को जनवरी 2019 में सुप्रीम कोर्ट में जब पदोन्नत किया गया तो उनकी नियुक्ति ने विवाद खड़ा कर दिया था। दअरसल, उम्र और अनुभव में उनसे अन्य सीनियर जज लाइन में होने के बावजूद उन्हें सीधे सुप्रीम कोर्ट में नियुक्त किया गया था।

चाचा भी रह चुके हैं: जज न्यायाधीश संजीव खन्ना के पिता के अलावा उनके चाचा हंसराज खन्ना मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, भी सुप्रीम कोर्ट के जज रह चुके हैं। उनके चाचा ने कई अहम फैसले सुनाए थे। इसके अलावा, उनके पिता दिल्ली हाईकोर्ट में जज रहे थे। वहीं, अगर सीजेआई संजीव खन्ना की बात करें तो उनके कार्यकाल में अब तक कई अहम निर्णय लिए जा चुके हैं।

कई अहम फैसलों का हिस्सा रहे हैं न्यायमूर्ति खन्ना :

न्यायमूर्ति खन्ना उस पांच न्यायाधीशों वाली पीठ का हिस्सा थे। जिसने संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के केंद्र के 2019 के फैसले को बरकरार रखा था। न्यायमूर्ति खन्ना निवर्तमान सीजेआई के बाद सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं और राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (एनएलएसए) के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। जस्टिस खन्ना ने ही कथित दिल्ली आबकारी नीति घोटाला मामलों में आरोपी अरविंद केजरीवाल को लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए अंतरिम जमानत दी थी। वह शीर्ष अदालत के पूर्व न्यायाधीश एच आर खन्ना के भतीजे हैं। जो 1973 के केशवानंद भारती मामले में मूल संरचना सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले ऐतिहासिक फैसले का हिस्सा थे।

**1983
में बार काउंसिल ऑफ
दिल्ली में बतौर एक
वकील के रूप में
कराया था इनरोल**



बंगाल में गंभीर है बाल विवाह की समस्या

प्रभाकर मणि तिवारी

आ जादी के इतने दशक बाद भी पश्चिम बंगाल में बाल विवाह की समस्या बेहद गंभीर बनी हुई है। अब राज्य की ममता बनर्जी सरकार की ओर से हाल में लागू नए नियम ने बाल विवाह करने वालों के लिए मुसीबत पैदा कर दी है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में बाल विवाह का प्रतिशत वर्ष 1992-93 के 5412 प्रतिशत से घट कर 2019-21 में भले 2313 प्रतिशत तक पहुंच गया हो, बंगाल में यह 41 प्रतिशत बनी हुई है। इस मामले में यह बिहार और त्रिपुरा जैसे निचले पायदान वाले राज्यों की बराबरी पर खड़ा है।

अब राज्य की ममता बनर्जी सरकार की ओर से हाल में लागू नए नियम ने बाल विवाह करने वालों के लिए मुसीबत पैदा कर दी है। इसमें कहा गया है कि शादी का पंजीकरण उसी स्थिति में होगा जब शादी के समय लड़के और लड़की की उम्र क्रमशः 21 और 18 साल की हो। दरअसल, सरकार ने बाल विवाह पर अंकुश लगाने के लिए ही यह नियम बनाया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर इस गंभीर सामाजिक कुरीति का अध्ययन करने वाली मुंबई की संस्था इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर पापुलेशन साइंस (आईआईपीएस) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पश्चिम बंगाल के तीन जिले - मुर्शिदाबाद, पूर्व मेदिनीपुर और पश्चिम मेदिनीपुर - बाल विवाह के मामले में देश के पांच शीर्ष जिलों में शामिल हैं।

इस सूची में बाकी दो जिले बिहार के समस्तीपुर और लखीसराय हैं। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि पूर्व मेदिनीपुर को राज्य में सबसे साक्षर जिला होने का दर्जा भी हासिल है। रिपोर्ट के मुताबिक, इन जिलों में सौ में से 62 से 66 युवतियों को शादी 18 साल की उम्र से पहले ही हो जाती है। यह संख्या राष्ट्रीय औसत 23 के मुकाबले करीब तीन गुनी है।

मैरिज ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसिएशन की प्रदेश सचिव ज्योत्सना महतो कहती हैं, “अब वैसे लोगों की शादियों का पंजीकरण नहीं हो सकता जिन्होंने कम उम्र में शादी की है। इससे भविष्य में बाल विवाह पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी। नए नियम के तहत बच्चों का जन्म प्रमाणपत्र बनवाने के लिए भी मात-पिता का पंजीकरण प्रमाणपत्र अनिवार्य कर दिया गया है।”

इससे पहले राष्ट्रीय परिवार कल्याण सर्वेक्षण 2019-21 में कहा गया था कि वर्ष 2005-06 में भारत भर में बाल विवाह की दर 47 प्रतिशत थी।

वर्ष 2011 की जनगणना में अनुमान लगाया गया था कि 10 से 19 साल के बीच के करीब 117 करोड़ लोगों की शादी हो चुकी है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की एक ताजा रिपोर्ट में आशंका जताई गई है कि 1110 करोड़ से ज्यादा बच्चे बाल विवाह के लिहाज से बेहद संवेदनशील हैं। लेकिन सामाजिक संगठनों की राय में असली आंकड़ा कहीं ज्यादा है। चाइल्ड मैरिज फ्री इंडिया नेटवर्क की ओर से भारत बाल संरक्षण शीर्षक एक अध्ययन में बताया गया था कि वर्ष 2022 के दौरान देश में प्रति मिनट तीन लड़कियों की शादी हुई थी। लेकिन नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो के आंकड़ों में कहा गया है कि वर्ष 2018 से 2022 के दौरान बाल विवाह के महज 3,683 मामले ही दर्ज किए गए। अब निकट भविष्य में होने वाली जनगणना से इस मामले की सही तस्वीर सामने आने की संभावना है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के ताजा निर्देश भी बेहद अहम हैं। सुप्रीम

कोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय खंडपीठ ने बाल विवाह पर रोक की मांग में दायर एक याचिका की सुनवाई के बाद बीते महीने अपने फैसले में कहा था कि बाल विवाह रोकथाम अधिनियम की किसी भी व्यक्तिगत कानून की आड़ में अनदेखी नहीं की जा सकती। ‘सोसाइटी फॉर एनलाइटनमेंट एंड वॉलंटरी एक्शन’ नामक एक गैर-सरकारी संगठन ने वर्ष 2017 में दायर उक्त याचिका में आरोप लगाया था कि बाल विवाह निषेध अधिनियम पर ठीक से अमल नहीं किया जा रहा है। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि बाल विवाह की बुराइयों के बारे में सबको जानकारी होने के बावजूद इसका प्रचलन चिंताजनक है। कोर्ट ने हर जिले में ऐसी शादियों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए एक बाल विवाह निषेध अधिकारी नियुक्त करने का निर्देश दिया है। उसने इस सामाजिक कुरीति पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए 12-सूत्री दिशा निर्देश जारी किया था।

तमाम उपायों के बावजूद बाल विवाह पर अंकुश लगाने में नाकाम रही पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार ने हाल में लागू एक नए नियम में कहा है कि पंजीकरण के लिए शादी के समय लड़के-लड़की की उम्र क्रमशः 21 और 18 साल होना अनिवार्य है। इससे खासकर सरकारी कर्मचारियों की पेशानी बढ़ गई है। पूर्व मेदिनीपुर जिले के एक सरकारी कर्मचारी नाम नहीं छापने पर कहते हैं, “मेरी शादी करीब तीस साल पहले हुई थी। उस समय यह नियम कौन देखता था। अब मुझे अगले महीने रिटायर होना है। लेकिन शादी के पंजीकरण के बिना मैं अपनी पत्नी को नॉमिनेट नहीं कर सकता। लेकिन चूंकि शादी के समय उनकी उम्र 18 साल की थी, पंजीकरण का आवेदन खारिज हो गया है।”

पहले के नियम में कहा गया था कि शादी के पंजीकरण के समय लड़के-लड़की की उम्र कम से कम 21 साल होनी चाहिए, भले शादी उससे पहले ही हो गई हो।



परिवार नियोजन की दिशा में बदलाव

अपर्णा रामामूर्ति

प्रजनन दर में काफी ज्यादा गिरावट को देखते हुए, दक्षिण भारत के कुछ राज्य परिवार नियोजन की दिशा में बदलाव कर रहे हैं और अब लोगों को ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। पिछले साल भारत ने जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया और दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन गया। फिलहाल, भारत की आबादी करीब 145 करोड़ है। कई दशकों से भारत में जनसंख्या में तेज वृद्धि को एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा जाता रहा है और सरकारों ने लगातार जनसंख्या नियंत्रण पर जोर दिया है। सन् 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि बड़ी आबादी देश के विकास में बाधा बन रही है। उन्होंने राज्य सरकारों से इस समस्या को हल करने का आग्रह किया था। वहीं अब, देश के कुछ राजनेता जनसंख्या बढ़ने को लेकर नहीं, बल्कि प्रजनन दर में गिरावट और स्थिर जनसंख्या सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त जन्म दर न होने पर चिंतित हैं।

हाल ही में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन। चंद्रबाबू नायडू ने जनसंख्या नियंत्रण को बढ़ावा देने के बजाय, परिवारों को ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने एक ऐसा कानून भी प्रस्तावित किया जिसके अनुसार सिर्फ दो या उससे ज्यादा बच्चे वाले लोग ही स्थानीय चुनावों में उम्मीदवार बन सकेंगे।

कुछ दिनों बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी इसी तरह का विचार सामने रखा। उन्होंने भी वहां के लोगों से ज्यादा बच्चे पैदा करने का आग्रह किया। दरअसल, दशकों से आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और अन्य भारतीय राज्यों ने छोटे परिवार को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। लोगों को दो बच्चों तक सीमित रहने के लिए प्रोत्साहित किया है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि अब दक्षिण भारत के राजनेता ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए लोगों को क्यों प्रोत्साहित कर रहे हैं?

जन्म दर में भारी गिरावट : भारत में जन्म दर में

आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में अब प्रजनन दर यूरोप के नॉर्डिक देशों जैसी है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2023 में फिनलैंड में जन्म दर 1.3 थी।”

पिछली सदी में नाटकीय रूप से गिरावट आई है। यह आंकड़ा 1880 से 1970 तक स्थिर रहा। इसके मुताबिक, भारत में महिलाएं अपने जीवनकाल में औसतन 517 से 6 बच्चे पैदा करती थीं। साल 2022 तक यह आंकड़ा घटकर लगभग 2101 बच्चे प्रति महिला पर आ गया। यह जनसंख्या को स्थिर रखने के लिए जरूरी दर यानी तथा-कथित रिप्लेसमेंट लेवल से कम है।

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज में जनसांख्यिकी के प्रोफेसर श्रीनिवास गोली ने बताया, “फ्रांस और ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों को अपनी प्रजनन दर कम करने में 200 साल से ज्यादा का समय लगा, जबकि अमेरिका को लगभग 145 साल लगे। हालांकि, भारत में यह बदलाव सिर्फ 45 साल में हुआ। चिंता की सबसे बड़ी वजह इस बदलाव की गति है।” गोली ने आगे कहा कि जन्म दर में तेजी से गिरावट के कारण भारत में उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है। हालांकि, मौजूदा समय में कामकाजी लोगों की संख्या अधिक है, लेकिन वृद्धों की बढ़ती आबादी भविष्य में चुनौतियां पैदा कर सकती हैं।

उन्होंने बताया, “भारत के पास विकसित देश बनने का ‘मौका’ है। इसकी वजह यह है कि फिलहाल भारत की कामकाजी आबादी बुजुर्गों और बच्चों की संख्या से ज्यादा है। यह स्थिति 2005 में बनी थी और 2061 तक बनी रहेगी। सबसे ज्यादा फायदा 2045 तक मिलने की उम्मीद है। हमें युवा आबादी के फायदे मिल रहे हैं, लेकिन अभी भी बहुत संभावनाएं बाकी हैं।” तमिलनाडु राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष और

अर्थशास्त्री जे। जयरंजन ने बताया कि बढ़ती बुजुर्ग आबादी भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है और देश पर आर्थिक बोझ बढ़ा सकती है। उन्होंने कहा, “बुजुर्ग आबादी की देखभाल करना परिवार और राज्य, दोनों के लिए एक चुनौती होगी। दुर्भाग्य से, हमने अभी तक इससे जुड़ी नीतियों पर पूरी तरह विचार-विमर्श नहीं किया है।”

कम जन्म दर पूरे भारत में चिंता का विषय है। हालांकि, दक्षिण भारत के राज्य विशेष रूप से चिंतित हैं। करीब 24 करोड़ की आबादी वाले इस इलाके के सभी पांच राज्यों तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में जन्म दर में तेजी से गिरावट आयी है। यह राष्ट्रीय औसत 2.01 से भी कम हो चुका है।

भारत 1950 के दशक में अपनी जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय परिवार नियोजन नीति को अपनाते वाला पहला देश था। गोली कहते हैं, “दक्षिणी राज्यों ने इस नीति को बहुत सख्ती से अपनाया। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में अब प्रजनन दर यूरोप के नॉर्डिक देशों जैसी है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2023 में फिनलैंड में जन्म दर 1.3 थी।”

हालांकि, इन इलाकों की आर्थिक स्थिति में काफी ज्यादा अंतर है। गोली ने कहा, “जब प्रति व्यक्ति आय या मानव विकास संकेतकों की बात आती है, तो भारत अन्य देशों से बहुत पीछे है। उदाहरण के लिए, आंध्र प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय स्वीडन की तुलना में 22 गुना कम है।”

आर्थिक नतीजों के अलावा, दक्षिणी राज्य घटती जन्म दर के कारण राजनीतिक नुकसान से भी जूझ रहे हैं। जयरंजन ने कहा, “दक्षिण भारत में कम जन्म दर के कारण, दक्षिणी राज्यों की जनसंख्या की वृद्धि दर उत्तरी राज्यों की तुलना में कम है। इससे संसद में सीटें और केंद्र सरकार से मिलने वाले फंड पर भी असर पड़ सकता है, क्योंकि ये जनसंख्या के आधार पर तय किए जाते हैं।”



क्या अंबानी की जियो को पछाड़ देगी इलॉन इलॉन मस्क की स्टारलिक

इलॉन मस्क की सैटेलाइट इंटरनेट कंपनी स्टारलिक कई सालों से भारत में प्रवेश करना चाह रही है। भारत सरकार ने कहा है कि कंपनी सभी अनिवार्यताओं को पूरा करने में लगी हुई है। इस बयान के बाद भारतीय टेलीकॉम कंपनियां चिंता में हैं।

यह कहना मुश्किल है कि इलॉन मस्क के लिए यह सिर्फ संयोग है कि एक तरफ अमेरिका में उन्हें ट्रंप सरकार का हिस्सा बनाने के लिए चुन लिया गया है और दूसरी तरफ भारत में वो अपनी इंटरनेट कंपनी स्टारलिक को प्रवेश दिलाने में जुटे हुए हैं। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक भारत के दूरसंचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा है कि सैटेलाइट इंटरनेट उपलब्ध करवाने वाली मस्क की कंपनी स्टारलिक भारत के सुरक्षा संबंधी मानकों को पूरा करने की प्रक्रिया में है और प्रक्रिया पूरी होते ही उसे लाइसेंस दे दिया जाएगा।

सिंधिया ने कहा, “आपको इसे सुरक्षा के दृष्टिकोण से देखना होगा और सुनिश्चित करना होगा कि सभी सुरक्षा संबंधित चिंताओं को संबोधित कर लिया गया है।” इस बयान को इस बात का संकेत माना जा रहा है कि स्टारलिक को लाइसेंस जल्द मिल जाएगा। कंपनी कई सालों से भारतीय बाजार में घुसने की कोशिश कर रही है।

यह बात मीडिया में पहले ही आ चुकी है कि स्टारलिक भारत सरकार से डाटा के स्टोरेज समेत कई

विषयों पर बातचीत कर रही है। सुरक्षा को लेकर हरी झंडी मिलते ही स्टारलिक भारत में ब्रॉडबैंड इंटरनेट सेवाएं लाने के मस्क के सपने के एक कदम और करीब पहुंच जाएगा।

इस समय भारत के ब्रॉडबैंड बाजार में मुकेश अंबानी की रिलायंस जियो का वर्चस्व है। उसके पास 114 करोड़ सब्सक्राइबर हैं। स्टारलिक ने भारत सरकार को कहा है कि वो सरकार की सभी जरूरतें पूरी करेगी।

यह हरी झंडी मिलने के बाद कंपनियों को ब्रॉडबैंड सेवाएं देना शुरू करने के लिए स्पेक्ट्रम लेना आवश्यक होता है और उसे लेकर मस्क और अंबानी के बीच पहले से खींचतान चल रही है। अक्टूबर में भारत सरकार ने कहा कि सैटेलाइट ब्रॉडबैंड के लिए स्पेक्ट्रम की नीलामी करने की जगह सरकार फैसला करेगी कि किसे देना है। मस्क यही चाहते थे, जबकि अंबानी नीलामी करवाने का समर्थन कर रहे थे।

अंबानी के पास 47 करोड़ से ज्यादा टेलीकॉम उपभोक्ता भी हैं और वह स्पेक्ट्रम की नीलामी में 160 अरब रुपयों से ज्यादा खर्च चुके हैं। लेकिन उन्हें चिंता है कि उनके ब्रॉडबैंड उपभोक्ता और उसके बाद मुफकिन है डाटा और वॉइस के ग्राहक मस्क के पास चले जाएंगे।

एक रिपोर्ट के मुताबिक रिलायंस को सैटेलाइट ब्रॉडबैंड सेवाएं शुरू करने के लिए सुरक्षा क्लीयरेंस पहले ही मिल चुका है और अब उसे स्पेक्ट्रम की नीलामी का इंतजार है। अंबानी ने कभी जियो के

मोबाइल प्लान में मुफ्त इंटरनेट दिया था। मस्क को भी इसी तरह की रणनीतियों के लिए जाना जाता है।

उन्हें जब केन्या में स्टारलिक ब्रॉडबैंड शुरू किया था तब उन्होंने उसका शुल्क 10 डॉलर प्रति माह रखा था, जबकि अमेरिका में यही शुल्क 120 डॉलर प्रति माह है। केन्या में उनकी इस रणनीति से स्थानीय कंपनियां परेशान हो गई थीं।

अब भारतीय कंपनियों को भी इसी तरह की स्थिति का डर सता रहा है। जियो ने भारत के दूरसंचार नियामक टीआरएआई से कहा है कि स्पेक्ट्रम की नीलामी ही होनी चाहिए, जबकि मस्क का कहना है कि यह अभूतपूर्व होगा क्योंकि लंबे समय से पूरी दुनिया में सैटेलाइट स्पेक्ट्रम का आवंटन ही होता रहा है।

जानकारों का कहना है कि नीलामी की वजह से सभी कंपनियों का खर्च बढ़ जाएगा और इससे इन सेवाओं सेवा को शुरू करने पर असर पड़ेगा। कॉउंटरपॉइंट टेक्नोलॉजी मार्किट रिसर्च में एप्सोसिएट निदेशक गारेथ ओवेन ने बताया कि सैटेलाइट बाजार मुनाफा कमाने के लिए बड़ा प्रतिस्पर्धात्मक और कठिन बाजार है।

उन्होंने कहा, “बहुत सारे खिलाड़ी एक सीमित बाजार का पीछा कर रहे हैं। इस वजह से हर कंपनी अपने बाजार में किसी प्रतिद्वंदी के प्रवेश को रोकने या उसमें देर करने के लिए जो उससे बन पड़ेगा वो करेगी।”

बुलडोजर न्याय: अदालत ने कहा- अधिकारी जज न बनें

सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर न्याय पर अपना फैसला सुनाया। उसने मात्र आरोपी होने पर उसकी संपत्ति को तोड़ने पर सख्त टिप्पणियां की हैं। अदालत ने कहा कि गाइडलाइंस जारी हो चुका है, उसका पालन करें। अधिकारी जज बनने की कोशिश न करें, उन्हें 15 दिन पहले अनिवार्य रूप से तोड़फोड़ का नोटिस देना होगा। जानिए पूरा फैसला: बुलडोजर 'न्याय' पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को निर्देश दिया कि संपत्ति के मालिक को 15 दिन की पूर्व सूचना दिए बिना और वैधानिक दिशानिर्देशों का पालन किए बिना कोई तोड़फोड़ नहीं किया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह नोटिस संपत्ति मालिक को रजिस्टर्ड डाक से भेजा जाएगा और उस इमारत के बाहरी हिस्से पर भी लगाया जाएगा। नोटिस में अवैध निर्माण की प्रकृति, खास उल्लंघन का ब्यौरा और विध्वंस के लिए आधार शामिल करना होगा। पूरे तोड़फोड़ की वीडियोग्राफी की जानी चाहिए, और दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने वाले अधिकारी, विभाग को अवमानना का सामना करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले की 5 खास बातें

- कार्यपालिका कभी जज नहीं बन सकती
- बिना उचित प्रक्रिया के आरोपी का घर तोड़ना असंवैधानिक
- यहां तक कि दोषी पाए जाने पर भी सजा के तौर पर उनकी संपत्ति को नष्ट नहीं किया जा सकता
- सुनवाई से पहले आरोपी को दंडित नहीं किया जा सकता
- कानून का अनुपालन नगरपालिका कानूनों के लिए भी होना चाहिए

जस्टिस बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की पीठ ने साफ शब्दों में कहा- "कार्यपालिका की मनमानी कार्रवाई के खिलाफ कानून का शासन और नागरिकों के अधिकार हैं। कानूनी प्रक्रिया ऐसी कार्रवाई को माफ नहीं कर सकती। कानून का नियम मनमानी कार्रवाई के खिलाफ आदेश देता है। इसका उल्लंघन अराजकता को बढ़ावा दे सकते हैं, और संवैधानिक लोकतंत्र की रक्षा के लिए नागरिक अधिकारों की सुरक्षा आवश्यक है।"

अदालत ने कहा- "अगर कार्यपालिका जज की भूमिका निभाती है और कानून की प्रक्रिया का पालन किए बिना किसी घर को ध्वस्त करने का आदेश देती है, तो यह कानून के शासन का उल्लंघन है। राज्य कानून की उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना आरोपी या दोषी के खिलाफ मनमानी कार्रवाई नहीं कर सकता।"

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि अधिकारियों को यह दिखाना और तथ्यों के साथ बताना होगा कि अब विध्वंस ही एकमात्र सहारा है। ऐसे मामलों में भी यही प्रक्रिया अपनानी होगी, जहां कुछ अतिक्रमण हैं।

सबसे महत्वपूर्ण निर्देश : सुप्रीम कोर्ट ने कहा- सभी नोटिस नगर निकाय यानी नगर निगम, नगर महापालिका, नगर पालिका, नगर पंचायत के एक खास पोर्टल पर डाले जाने चाहिए, जबकि वही नोटिस रजिस्टर्ड डाक के जरिए भी भवन मालिक या संपत्ति मालिक को

भेजे जाने चाहिए। सुप्रीम कोर्ट बेंच ने कहा- इन आदेशों का पालन करने की निगरानी के लिए जिला मजिस्ट्रेटों (डीएम) को जवाबदेह बनाया गया है। यानी अदालत के आदेशों को तोड़फोड़ करने वाली एजेंसी मान रही है या नहीं, यह जिम्मेदारी डीएम की होगी।

अदालत ने इनकी तारीफ की : न्यायालय ने वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ। अभिषेक मनु सिंघवी, सीयू सिंह, एमआर शमशाद, संजय हेगड़े, नित्या रामकृष्णन, अधिवक्ता प्रशांत भूषण, मोहम्मद निजाम पाशा, फौजिया शेख, रश्मी सिंह आदि द्वारा दिए गए सुझावों की सराहना की। वरिष्ठ अधिवक्ता नचिकेता जोशी को सुझावों को एकत्र करने के लिए और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को मामले को निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से पेश करने के लिए नियुक्त किया गया।

सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार की एजेंसियों द्वारा मनमाने ढंग से विध्वंस (डिमोलिशन) के खिलाफ पिछले हफ्ते दिशानिर्देश जारी किए थे। जिसमें फैसला सुनाया गया कि नागरिकों की आवाज को "उनकी संपत्तियों को नष्ट करने की धमकी देकर दबाया नहीं जा सकता" और इस तरह के "बुलडोजर न्याय" के लिए कानून द्वारा शासित समाज में कोई जगह नहीं है। भारत के चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली बेंच ने 6 नवंबर को कहा, "एक गंभीर खतरा है कि अगर राज्य के किसी भी विंग या अधिकारी द्वारा उच्चस्तरीय और गैरकानूनी व्यवहार की अनुमति दी जाती है, तो नागरिकों की संपत्तियों का विध्वंस बाहरी कारणों से चुनिंदा प्रतिशोध के रूप में होगा।" सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर सीजेआई डी वार्ड चंद्रचूड़ के रिटायरमेंट की पूर्व संध्या पर शनिवार को सारी गाइडलाइंस और आदेश को अपलोड कर दिया गया था। अदालत ने निर्देश दिया कि इन दिशानिर्देशों की प्रतियां तत्काल लागू करने के लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को भेजी जाएं। यह स्पष्ट करते हुए कि कानून अवैध अतिक्रमणों को माफ नहीं करता है, अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि हटाने के लिए स्थापित कानूनी प्रक्रियाओं और सुरक्षा उपायों का पालन किया जाना चाहिए।

कोर्ट गाइडलाइंस के छह निर्देश

अदालत ने किसी भी संपत्ति को ढहाने से पहले छह आवश्यक कदम उठाने का आदेश दिया, यहां तक कि विकास परियोजनाओं के लिए विध्वंस की कार्रवाई के दौरान भी पालन करना होगा।

- अधिकारियों को पहले मौजूदा भूमि रिकॉर्ड व मानचित्रों को सत्यापित करना होगा
- वास्तविक अतिक्रमणों की पहचान करने के लिए उचित सर्वेक्षण किया जाना चाहिए
- आपत्तियों पर विचार किया जाना चाहिए और स्पष्ट आदेश पारित किया जाना चाहिए
- कथित अतिक्रमणकारियों को तीन लिखित नोटिस जारी किए जाने चाहिए
- स्वैच्छिक हटाने के लिए उचित समय दिया जाना चाहिए
- अगर जरूरी हो तो अतिरिक्त भूमि कानूनी रूप से अधिग्रहित की जानी चाहिए

लोक लुभावन घोषणाओं को फ्रीबीज या रेवड़ी क्यों कहें!

अरविंद मोहन

अभी तक इंग्लिश शब्द फ्रीबीज का अनुवाद कहीं खैरात नजर नहीं आया है। खैरात खाने या लेने को बुरा माना जाता है- पहले तो बहुत बुरा माना जाता था और अब भी माना जाता है। इसमें खैरात देने वाले को पुण्य मिलने और खाने वाले को उसके पापों में हिस्सेदारी आ जाने का भाव माना जाता है। चुनाव के समय दिए जाने वाले लोक लुभावन सरकारी खैरात या सरकार बनने पर दिए जाने वाले लाभों के वायदे को अंग्रेजी में फ्रीबीज कहा जाता है और मीडिया ने उसके अर्थ के काफी आसपास का शब्द रेवड़ी इस्तेमाल करना शुरू किया है।

सरकारों और राजनैतिक दल खैरात का प्रयोग करने से बचें, यह तो स्वाभाविक है क्योंकि वे क्यों स्वीकार करेंगे कि वे अपने पापों का बोझ हल्का करने के लिए ऐसे कदम उठा रहे हैं या उसका वायदा करके

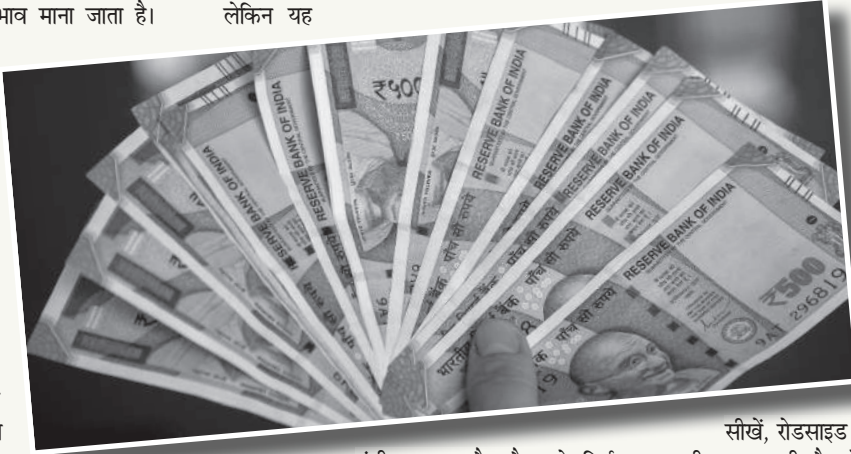
चुनाव लड़ रहे हैं। मीडिया अगर ज्यादा ईमानदार होता तो राजनेताओं और सरकारों की इच्छा की परवाह न करता। दक्षिण की राजनीति में, खासकर तमिलनाडु में फ्रीबीज का चलन काफी समय से था लेकिन देश के स्तर पर कोरोना के दौर में सरकार द्वारा पाँच किलो मुफ्त राशन देने के फैसले के बाद इसका चलन अचानक बढ़ा है क्योंकि कोरोना के बाद हुए चुनाव में भाजपा को इस फैसले का लाभ मिलने का रुझान बहुत साफ दिखा।

पर कोरोना के समय गरीब लोगों को राशन उपलब्ध कराना और साथ ही अनाज से भरे सरकारी गोदामों में खाद्यान्नों को सड़ाने की जगह बांटने का विकल्प बहुत बढ़िया था। और अगर बोसिस में नरेंद्र मोदी और भाजपा की लोकप्रियता बढ़ी तो उससे किसी को शिकायत नहीं होनी चाहिए। अगर लॉक-डाउन का फैसला गलत था और उससे खास तौर से प्रवासी मजदूरों को बहुत कष्ट हुआ तो अनाज बांटने का सही फैसला करने का श्रेय भी देना चाहिए। लेकिन एक बार चुनावी लाभ देख लेने के बाद लगातार मुफ्त अनाज बांटने का फैसला निश्चित रूप से राजनीति का हिस्सा है और इसको अलग नजरिए से देखना चाहिए।

यह अलग बात है कि उसके बाद से महिलाओं को, बेरोजगारों को, दलितों-आदिवासियों को, किसानों को (मुफ्त बिजली और कर्ज माफी समेत) बेहतर खरीद मूल्य देने, सालाना सहायता देने और कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना, न जाने किस किस तरह के लाभ देने की घोषणा करने करने की होड़ शुरू हो गई। और हालत

यह हो गई कि कई जगहों से इन वायदों को पूरा करने लायक बजट न होने, योजनाओं के बीच में लटकने और शुरू भी न हो पाने की खबरें आनी शुरू हो गई हैं। इनसे और कुछ हुआ या नहीं भाजपा और कांग्रेस को एक दूसरे पर ओकात से ज्यादा बड़े वायदे करने और वादाखिलाफी करने का आरोप लगाने का अवसर मिल गया। वायदों की राजनीति एक है और वादाखिलाफी की राजनीति दूसरी।

लेकिन यह



गंभीर मसला है और इसे सिर्फ राज्यों या केंद्र के बजट, घाटे, कर्ज जैसे राजकोषीय प्रबंधन वाली शब्दावली में उलझाना गलत है, खैरात (राजनेताओं के अपराधबोध और पाप का भागीदार बनकर उनको माफ कर देना अर्थात रेवड़ी पाकर वोट देना) का तत्व होने के बावजूद इनको खैरात या मुफ्त की रेवड़ी कहना गलत है और बड़े बड़े वायदे करने वाले राजनेताओं को हल्का मान लेना गलत है। हमारे यहां यह सब वायदे और फैसले बड़ी पार्टियां, बड़े नेता और केंद्र तथा राज्य सरकारें कर रही हैं। और इनमें ऐसा कोई भी नहीं है जो आज वायदे करे, कल वोट ले और परसों रफूचक्कर हो जाए।

आज तक एक भी खुला संवाददाता सम्मेलन न करने के पीछे उन वायदों से जुड़े सवालियों से बचना मुख्य कारण है जबकि उनके सबसे भरोसेमंद साथी इस बीच धीरे से उनको जुमला करार दे चुके हैं। और इस बड़ी असफलता या गलती के बावजूद लोगों के बीच उनकी विश्वसनीयता इतनी है कि जब वे किसानों को साल में छह हजार रुपए देने का वायदा करते हैं (और देते हैं) तो लोग उस पर भरोसा करते हैं और राहुल गांधी द्वारा छह हजार रुपए प्रति माह देने के वायदे पर भरोसा नहीं करते। और अगर कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे अपनी कांग्रेस सरकार से पूरा कर सकने लायक वायदे की नसीहत देते हैं तो वे कोई पार्टीद्रोह नहीं कर रहे हैं- यह एक तरह का कोर्स-कारेक्शन है। लोकतंत्र में गलतियां सुधारना एक बड़ा गुण है।

पर दिन ब दिन मोदी जी का ग्राफ नीचे आ रहा है

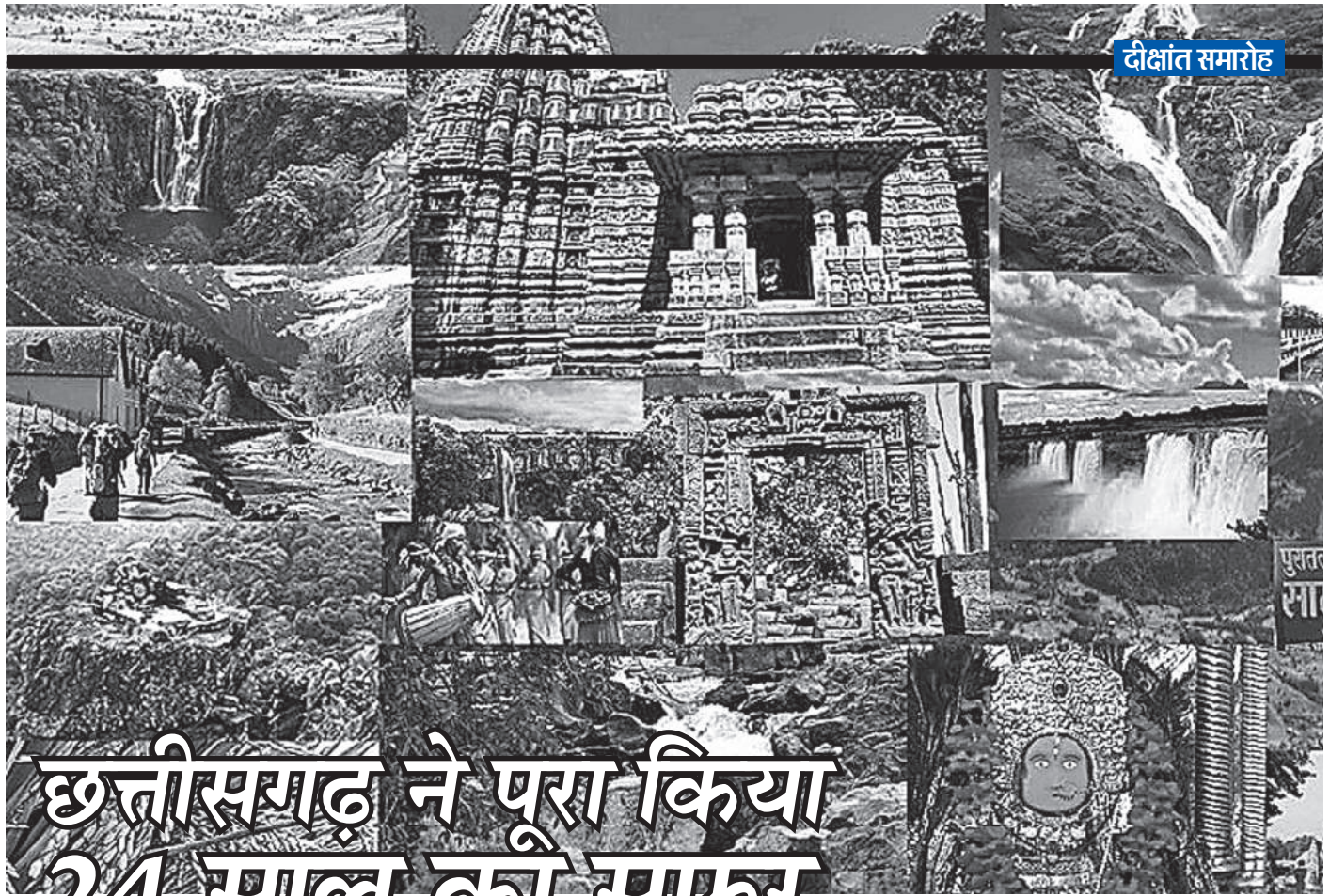
अगर 2014 के चुनाव के पहले नरेंद्र मोदी ने अच्छे दिन लाने के नाम पर बहुत बड़े बड़े वायदे किए और उन हवाई वायदों का एक अंश भी पूरा नहीं हुआ तो वे आज भी उन सवालियों से नजर चुराते हैं।

और राहुल का ऊपर तो उसमें इन चुनावी वायदों और चालाकियों का भी हाथ है। हिमाचल और कर्नाटक में कांग्रेस की जीत और लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन की बेहतर सफलता के पीछे उनके वायदों पर बढ़ता भरोसा और मोदी जी तथा भाजपा की बातों पर घटता भरोसा भी कारण है। मोदी के खिलाफ एन्टी इंकम्बेन्सी भी

होगी ही। अगर रोज अनगिनत ड्रेस बदलने वाले और साढ़े आठ हजार करोड़ के विमान में यात्रा करने वाले और हर टूर पर पचासक करोड़ से ज्यादा खर्च करने वाले मोदी जी फ्रीबीज की घोषणा करते हैं तो उसमें गरीबों, बेरोजगारों, औरतों और किसानों के लिए ज्यादा कुछ न करने का अपराधबोध भी होगा। राहुल लाख झोपड़ियों में जाएं, मोची का काम

सीखें, रोडसाइड सैलून में मालिश कराएं लेकिन उनकी पदयात्रा भी सैकड़ों वातानुकूलित छावनियों और बसों-गाड़ियों वाली ही होती है। गरीब दलित/आदिवासी के घर पहुँचने पर उनके मन में भी अपराधबोध या अब तक की कांग्रेसी नीतियों की सीमाएं समझ आती होंगी। उनको मोदी जी की गलतियां दिखती हैं और मनमोहन सरकार की न दिखती हों, यह नहीं हो सकता।

और यह सोचने के बाद अगर हम फ्रीबीज पर विचार करेंगे तो ये खैरात, रेवड़ी और नेताओं/दलों का गैर जबाबदेही वाला वायदा भर नहीं लगेगा। तब यह इन चीजों के हल्के प्रभाव भर का मामला दिखेगा। साफ लगेगा कि यह हमारी अब तक चली सरकारी नीतियों की विफलता का एक कोर्स करेक्शन है। यह सरकारों द्वारा अपनी नाकामी स्वीकारना है। अगर नई आर्थिक नीतियां हमारे योजनाबद्ध विकास के समाजवादी मॉडल या मिश्रित अर्थव्यवस्था की विफलता से पैदा हुई लगेगी तो यह बदलाव डाइरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर का लगेगा। और हैरानी नहीं कि कथित विकास के बड़े बड़े दावों और योजनाओं के बाद जब गरीब ग्रामीण औरत के हाथ में हजार पंद्रह सौ रुपए भी ठोस रूप में आते हैं, साल में एक या दो सिलिन्डर गैस सस्ता मिल जाता है, राशन का अनाज कम दाम पर मिलता है तो उसे जेनुइन खुशी लगती है। इस खुशी में वह राजनीति का आगा-पीछा सोचने की जगह ऐसा लाभ देने वाली पार्टी को वोट दे आती है तो आप उसको न लोभी कहें न पाप का भागीदार। वह असल में कथित विकास और योजनाओं का मारा हुआ है। सब कुछ गँवाकर अब उसे यही मिल रहा है तो आप उसे फ्रीबीज या रेवड़ी मत कहिये।



छत्तीसगढ़ ने पूरा किया 24 साल का सफर

देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जिस परिकल्पना के साथ छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया था, उन्हें साकार करने की दिशा में प्रदेश निरंतर अग्रसर है। राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। राज्य सरकार आदिवासियों, किसानों, मजदूरों, वंचित वर्ग के लोगों तक उनके अधिकार पहुंचाने के लिए लगातार काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार विकास के लक्ष्य को तेजी से हासिल करेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में सभी की भागीदारी महत्वपूर्ण है। राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर हम सब प्रदेश को आगे ले जाने और विकास का नया अध्याय लिखने का संकल्प लें। साथ ही मुख्यमंत्री साय ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि राज्योत्सव के अवसर पर अपने घरों में दीप प्रज्वलित करें और दीपोत्सव के साथ राज्योत्सव मनाएं।

देश के 26 वें राज्य छत्तीसगढ़ का गठन 1 नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश से अलग कर किया गया था। छत्तीसगढ़ ने 24 सालों का सफर पूरा कर लिया है। छत्तीसगढ़ अपनी संस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए पूरे देशभर में जाना जाता है।

राज्य के गठन के समय यहां 16 जिले थे इन जिलों की 97 तहसीलें अस्तित्व में आईं। आज प्रदेश



में जिलों की संख्या 33 हो गई है।

प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ दक्षिण कोशल के नाम से जाना जाता था। 'छत्तीसगढ़' का अर्थ है रियासतों की जमींदारी। एक समय यहां 36 गढ़ हुआ करते थे

जिसकी वजह से नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। आधिकारिक दस्तावेजों में साल 1795 में छत्तीसगढ़ का पहली बार जिक्र किया गया था।

छत्तीसगढ़ के गठन के समय यहां जिलों की संख्या 16 थी जो बाद में बढ़कर 33 हो गईं। राज्य के गठन के बाद साल 2007 में 2 नए जिलों का गठन किया गया। फिर 5 साल 1 जनवरी 2012 को फिर से 9 जिले बनाए गए। इसके बाद सितंबर 2022 में 5 और नए जिलों का गठन किया गया।

छत्तीसगढ़ में आदिवासी जनसंख्या का प्रतिशत 33.6% है। यह भारत में आदिवासी जनसंख्या के मामले में दूसरे नंबर पर है। छत्तीसगढ़ में गोंड, मुरिया, बैगा, सहरिया, कंवर, उरांव, मुंडा, नगोसिया, कोरवा, भूईंहार रहते हैं। यहां अलग-अलग जनजातियों के द्वारा अलग-अलग त्योहार मनाया जाता है। जिसमें बस्तर दशहरा, बस्तर लोकोत्सव, राजिम कुंभ मेला, कोरिया मेला, फागुन मडई, मडई महोत्सव, पोला पर्व, दियारी, पोलिया महोत्सव, महुआ त्योहार, केशरपाल जैसे त्योहार शामिल हैं।

छत्तीसगढ़ खनिज संसाधन के मामले में तीसरे स्थान पर है। छत्तीसगढ़ कोयला, लौह अयस्क और डोलोमाइट जैसे खनिजों का प्रमुख उत्पादक है। इसके अलावा टिन अयस्क का उत्पादन करने वाला छत्तीसगढ़ भारत का एकमात्र राज्य है। साथ ही राज्य में बॉक्साइट, चूना पत्थर और क्वार्टजाइट के पर्याप्त भंडार भी मौजूद हैं।

मेडिकल डिवाइस उद्योग : सरकार ने लॉन्च की 500 करोड़ की योजना

केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री जेपी नड्डा ने भारत के चिकित्सा उपकरण उद्योग को मजबूत करने के लिए 500 करोड़ रुपये की योजना शुरू की। इस योजना का फोकस मुख्य घटकों और सहायक उपकरणों का निर्माण, कौशल विकास, क्लिनिकल स्टडीज का समर्थन, सामान्य इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास और उद्योग को बढ़ावा देने पर होगा।

सरकारी सूचना के अनुसार, इस योजना का शुरुआती बजट 500 करोड़ रुपये होगा, जो तीन साल तक के लिए है और वित्तीय वर्ष 2026-27 तक चलेगा।

इस योजना में पांच घटक शामिल हैं, जिनमें मेडिकल डिवाइस क्लस्टर के लिए सामान्य सुविधाएं, क्षमता निर्माण और कौशल विकास, आयात निर्भरता को कम करने के लिए एक सीमित निवेश योजना, क्लिनिकल स्टडीज का समर्थन और एक मेडिकल डिवाइस प्रमोशन योजना शामिल हैं।

इस योजना के तहत, भारत में लगभग 20 मेडिकल डिवाइस क्लस्टर के लिए शोध और विकास लैब्स, डिजाइन और टेस्टिंग सेंटर और पशुओं के लैब्स जैसी सामान्य सुविधाओं का निर्माण करके इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए 110 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इसमें टेस्टिंग सेंटरों को बढ़ाना भी शामिल होगा।

रसायन और उर्वरक मंत्रालय ने एक बयान में कहा, “सामान्य सुविधाओं के लिए 20 करोड़ रुपये और टेस्टिंग सुविधाओं के लिए 5 करोड़ रुपये तक का अनुदान प्रदान किया जाएगा।”

इसी तरह, मेडिकल डिवाइसों के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख घटकों और कच्चे माल के उत्पादन को प्रोत्साहित करके वैल्यू चेन को बढ़ाने के लिए सीमांत निवेश योजना के लिए 180 करोड़ रुपये की रूपरेखा तैयार की गई है, जिससे आयात निर्भरता कम होगी। यह उप-योजना 10-20 प्रतिशत की एकमुश्त पूंजी सब्सिडी प्रदान करती है, जिसकी अधिकतम सीमा प्रति परियोजना 10 करोड़ रुपये है।

सरकार चिकित्सा उपकरणों की क्लिनिकल स्टडीज के लिए 100 करोड़ रुपये की सहायता योजना भी प्रदान करेगी, जिससे डेवलपर्स और निर्माताओं

को पशु अध्ययन के लिए वित्तीय सहायता के लिए आवेदन करने और सफल होने पर मेडटेक उत्पादों को मान्य करने के लिए मानव परीक्षणों के लिए आवेदन करने में सक्षम बनाया जा सकेगा।

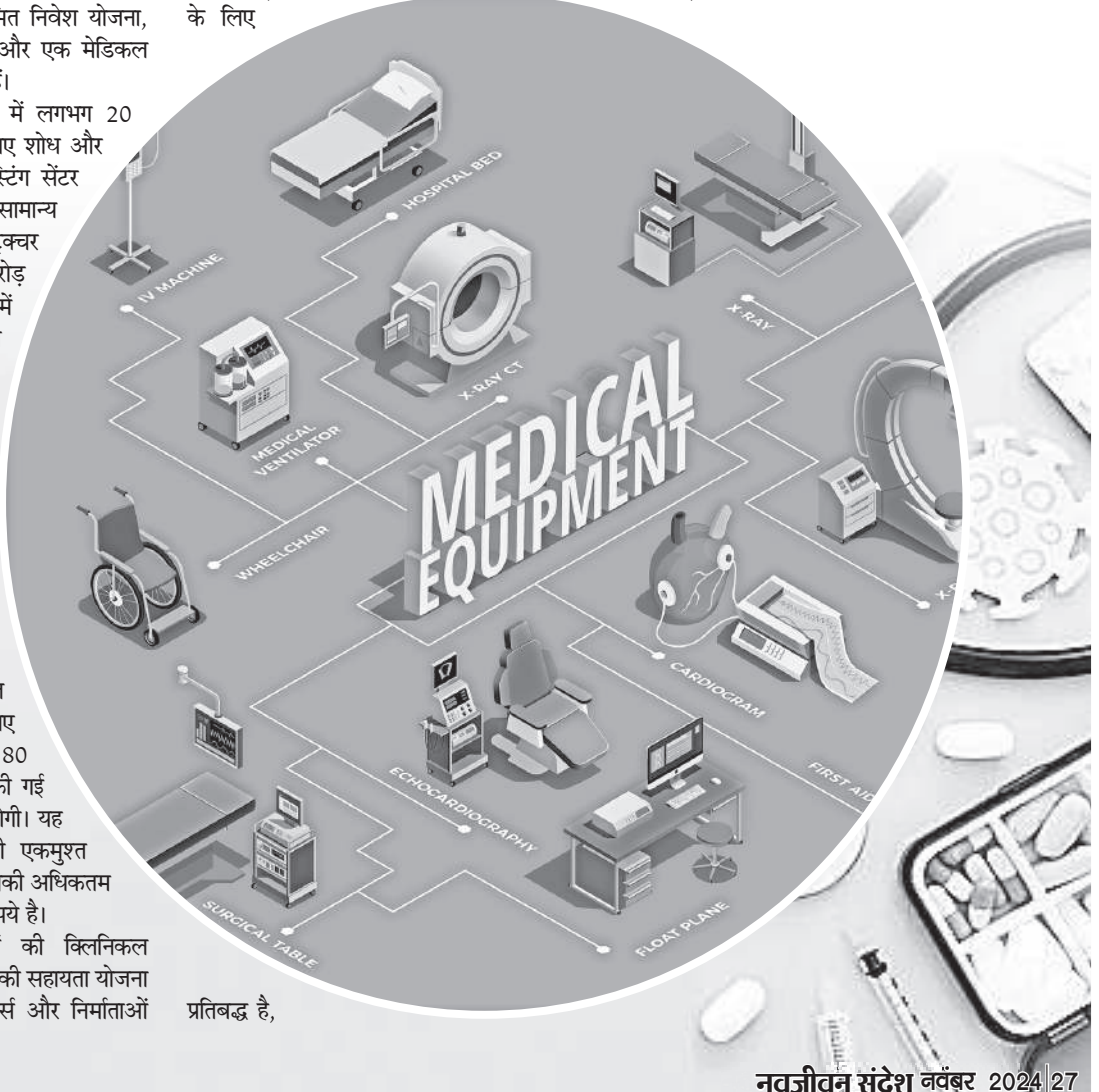
जबकि इस सेक्टर में कौशल विकास के लिए 100 करोड़ रुपये निर्धारित किए गए हैं, मेडिकल डिवाइस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त 10 करोड़ रुपये का उपयोग किया जाएगा।

इस योजना को उद्योग के लिए ‘गेम चेंजर’ बताते हुए, नड्डा ने कहा कि इससे न केवल उद्योग को लाभ होगा, बल्कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी होगा। उन्होंने कहा, “सरकार केंद्रित हस्तक्षेपों के माध्यम से मेडिकल डिवाइस उद्योग को मजबूत करने के लिए

जिससे पर्याप्त और परिवर्तनकारी परिणाम मिलेंगे।”

14 अरब डॉलर के बाजार साइज के साथ, भारत का मेडिकल डिवाइस उद्योग एशिया में चौथा सबसे बड़ा और टॉप 20 ग्लोबल मेडिकल डिवाइस बाजारों में शुमार है। 2030 तक इस सेक्टर के बढ़कर 30 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

इस योजना पर प्रतिक्रिया देते हुए, पॉली मेडिक्योर के प्रबंध निदेशक, हिमांशु बैद ने कहा कि इन उपायों से इस सेक्टर के विकास में तेजी आएगी, आयात निर्भरता कम होगी और मेडिकल डिवाइसों के अग्रणी निर्यातक के रूप में भारत की स्थिति मजबूत होगी। उन्होंने कहा, “इस व्यापक दृष्टिकोण से न केवल उद्योग को लाभ होगा बल्कि देश के हेल्थकेयर इन्फ्रास्ट्रक्चर को भी मजबूती मिलेगी।”



प्रतिबद्ध है,



गुरु नानक देव समाज क्रांति एवं धर्म क्रांति के पुरोधे

*ललित गर्ग

भा रतीय संस्कृति में गुरु नानकदेव एक महान पवित्र आत्मा थे, वे ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि थे। सिख धर्म के दस गुरुओं की कड़ी में प्रथम हैं गुरु नानक। अणु को विराट के साथ एवं आत्मा को परमात्मा के साथ एवं आत्मज्ञान को प्राप्त करने के एक नए मार्ग की परंपरा का सूत्रपात गुरुनानक ने किया है, यह किसी धर्म की स्थापना नहीं थी। उन्होंने परम सत्ता या संपूर्ण चेतन सत्ता के साथ तादात्म्य स्थापित करने का मार्ग बताया। यही वह सार्वभौम तत्व है, जो मानव समुदाय को ही नहीं, समस्त प्राणी जगत् को एकता के सूत्र में बांधे हुए हैं। इसी सूत्र को अपने अनुयायियों में प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित करते हुए 'सिख' समुदाय के प्रथम धर्मगुरु नानक देव ने मानवता एवं सर्वधर्म सद्भाव का पाठ पढ़ाया। उन्होंने समाज में आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ाने के लिए लंगर परंपरा की शुरुआत की थी, जहां गरीब-राजा, ऊंच-नीच सभी लंगर खाते थे। उन्होंने 'निर्गुण उपासना' पर जोर दिया और उसका ही प्रचार-प्रसार किया। वे मूर्ति पूजा नहीं करते थे और न ही मानते थे। ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान है, वही सत्य है, इसमें ही नानक देव का पूरा विश्वास था। उनका धर्म और अध्यात्म लौकिक तथा पारलौकिक सुख-समृद्धि के लिए श्रम, शक्ति, भक्ति एवं मनोयोग के सम्यक नियोजन की प्रेरणा देता है।

गुरु नानक देव की शिक्षाएं आज अधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि उन्होंने मानवता और सत्कर्म को सबसे बड़ा धर्म बताया था। उन्होंने समाज में कई बदलाव लाने का काम किया, उन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा दिया और वैवाहिक जीवन को पवित्र माना। उन्होंने कहा कि

विद्यालय में सभी धर्म, जाति, और सम्प्रदाय के लोगों को समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने आडंबर और अंधविश्वासों का खंडन किया और ईश्वर की प्रत्यक्ष भक्ति पर जोर दिया। उन्होंने अंतर-धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए संवादों का महत्व बताया और निस्वार्थ सेवा को बढ़ावा देते हुए करुणा, परोपकारिता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया।

गुरुनानक का जन्म 1469 में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। दीपावली के पन्द्रह दिन बाद कार्तिक पूर्णिमा को जन्में गुरु नानक देव सर्वधर्म सद्भाव की प्रेरक मिसाल है। उनके जन्मदिन को हम प्रकाश पर्व, गुरु पर्व, गुरु पूरब भी कहते हैं। वे अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म-सुधारक, समाज सुधारक, कवि, देशभक्त एवं विश्वबंधु - सभी गुणों को समेटे हैं। उनमें प्रखर बुद्धि के लक्षण बचपन से ही दिखाई देने लगे थे। वे किशोरावस्था में ही सांसारिक विषयों के प्रति उदासीन हो गये थे। गुरु नानक देव एक महापुरुष व महान धर्म प्रवर्तक थे जिन्होंने विश्व से सांसारिक अज्ञानता को दूर कर आध्यात्मिक शक्ति को आत्मसात करने हेतु प्रेरित किया। उनका कथन है- 'रैन गवाई सोई कै, दिवसु गवाया खाय। हीरे जैसा जन्मु है, कौड़ी बदले जाय। उनकी दृष्टि में ईश्वर सर्वव्यापी है और यह मनुष्य जीवन उसकी अनमोल देन है, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। उन्हें हम धर्मक्रांति के साथ-साथ समाजक्रांति का प्रेरक कह सकते हैं। उन्होंने एक तरह से सनातन धर्म को ही अपने भीतरी अनुभवों से एक नये रूप में व्याख्यायित किया।

गुरु नानक जी ने गुलामी, नस्लीय भेदभाव, और लिंग भेद की निंदा की। वे कहते थे कि पैसे हमेशा जब में होने चाहिए, हृदय में नहीं। मनुष्य को लोभ का त्याग करना

चाहिए और सदैव परिश्रम से धन कमाना चाहिए। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। आपके स्वभाव में चिंतनशीलता थी तथा आप एकांतप्रिय थे। आपका मन स्कूली शिक्षा की अपेक्षा साधु-संतों व विद्वानों की संगति में अधिक रमता था। बालक नानक ने संस्कृत, अरबी व फारसी भाषा का ज्ञान घर पर रहकर ही अर्जित किया। इनके पिता ने जब पुत्र में सांसारिक विरक्ति का भाव देखा तो उन्हें पुनः भौतिकता की ओर आसक्त करने के उद्देश्य से पशुपालन का कार्य सौंपा। फिर भी नानकदेव का अधिकांश समय ईश्वर भक्ति और साधना में व्यतीत होता था।

नानक के बचपन में ही अनेक अद्भुत घटनाएँ घटित हुईं जिनसे लोगों ने समझ लिया कि नानक एक असाधारण बालक है। कहते हैं कि नानक देव जी से ही हिंदुस्तान को पहली बार हिंदुस्तान नाम मिला। लगभग 1526 में जब बाबर द्वारा देश पर हमला करने के बाद गुरु नानक देव जी ने कुछ शब्द कहे थे तो उन शब्दों में पहली बार हिंदुस्तान शब्द का उच्चारण हुआ था- खुदासान खसमाना कीआ हिंदुस्तान डराईआ। एक और घटना है- नानक ग्रीष्म ऋतु की चिलचिलाती धूप में किसी ग्राम में गए। वहाँ वे गर्मी से बेहाल विश्राम करने के लिए बैठ गए। उन्हें कब नींद आ गई पता ही नहीं चला क्योंकि एक बड़े सर्प ने अपना फन फैलाकर उन्हें छाया प्रदान कर दी थी। गाँववाले यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए। गाँव के मुखिया ने उन्हें देवस्वरूप समझकर प्रणाम किया। तभी से नानक के नाम के आगे 'देव' शब्द जुड़ गया। वे कालांतर में 'गुरु नानकदेव' के नाम से विख्यात हुए। उनका उद्देश्य भी भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा करना ही था। गुरुनानक देव का जीवन सदैव समाज के उत्थान में बीता। गुरुनानक देव जी ने न केवल शिक्षाएं दीं, बल्कि स्वयं भी इसका पालन किया। उन्होंने करतारपुर साहिब में बिताए अपने जीवन के आखिरी 18 वर्षों में खेतों में हल चला कर यह बताया कि हर इंसान को अपने जीवन में मेहनत करनी चाहिए। एक अन्य रोचक घटना में उनके पिता ने उन्हें गृहस्थ आश्रम की ओर ध्यानाकर्षित करने के लिए तत्कालीन नवाब लोदी खॉं के यहाँ नौकरी दिलवा दी। वहाँ उन्हें भंडार निरीक्षक की नौकरी प्राप्त हुई।



राजगीर खेल परिसर 'गेम चेंजर' साबित होगा?

■ सौद तिवारी

ए काथ मौकों पर बिहार का कोई खिलाड़ी नेशनल टीम तक पहुँचता है, तो मालूम होता है कि वो खेल कूद की दुनिया में जगह बनाने के लिए सालों पहले अपने राज्य से बाहर निकल चुका होता है।

ऐसे राज्य में खेल कूद की आधारभूत सुविधाओं का नितांत अभाव दिखता रहा है। लेकिन इन दिनों बिहार के एक नई स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी और खेल परिसर को लेकर चर्चा हो रही है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अपने जिले नालंदा में बनने वाली यूनिवर्सिटी और उसमें बन चुके राजगीर खेल परिसर को उनका ड्रीम प्रोजेक्ट भी बताया जा रहा है। इसी खेल परिसर में 11 नवंबर से महिला एशियाई हॉकी चैंपियनशिप का आयोजन हो रहा है। मेजबान भारत के अलावा इसमें चीन, साउथ कोरिया, मलेशिया, जापान और थाईलैंड की टीमों हिस्सा ले रही हैं।

11 नवंबर को चीन और थाईलैंड के बीच हो रहे वीमेंस हॉकी मैच के दौरान स्टेडियम में भोजपुरी गाना 'आवे तानी खेले रउआ रंगे हरियर.....' बज रहा था। इस गाने पर स्थानीय दर्शकों के साथ-साथ सफेद और नीले रंग की मिडी पहनी चार चीयर गर्ल्स भी झूमती नजर आईं। चीयर गर्ल्स जिस दिशा में नाचती हैं, स्टेडियम में बैठे लोगों का चेहरा उसी दिशा में घूम जाता है। बिहार की राजधानी पटना से 110 किलोमीटर दूर नालंदा जिले स्थित राजगीर खेल परिसर में यह आयोजन 20 नवंबर तक चला।



स्टेडियम में बड़ी संख्या में दर्शक राजगीर की ग्रामीण आबादी पहुँच रही हैं। इस आबादी के लिए चीयर लीडर्स, हॉकी टर्फ और निकर पहने लड़कियों को खेलते देखने का अनुभव नया है।

यहां आई अंशु कुमारी कहती हैं, "हम बहुत एक्साइटेड हैं लड़कियों के मैच देखने के लिए। बिहार में हम ऐसा पहली बार देख रहे हैं। लड़कियां इससे स्पोर्ट्स में आगे आएंगी।"

मनसुख के पास खड़ी उनकी दोस्त स्मृति कुमारी कहती हैं, "उम्मीद तो नहीं थी कि राजगीर में भी कभी ऐसा होगा। अच्छी बात ये है कि अब अगर कोई खेलना चाहता है, तो उसको सब कुछ राजगीर में ही मिल जाएगा।" हालांकि, इन उम्मीदों के बीच कई लोग ऐसे भी हैं, जिनको खिलाड़ियों के परिधान पर एतराज है। जैसा कि स्टेडियम में मजदूरी करने वाली जया देवी कहती हैं, "इतना छोटा-छोटा कपड़ा पहनकर लड़की

सब खेल रही थी और सारे आदमी उसे देख रहे थे।"

लेकिन, यह आयोजन खेल की दुनिया में बिहार की मौजूदगी को दर्शा रहा है और इसी खेल परिसर में राज्य की पहली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी भी साल 2025 तक शुरू करने का लक्ष्य है।

अक्टूबर 2018 में राज्य के नालंदा जिले के राजगीर में 90 एकड़ में राजगीर खेल परिसर बनना शुरू हुआ था। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की तर्ज पर इस परिसर में एक्सपोज ब्रिक वर्क का इस्तेमाल किया गया है। एक्सपोज ब्रिक वर्क के काम में प्लास्टर, पेंट या दूसरे तरह का रंग रोगन नहीं होता। खेल परिसर में तैयार हो चुकी इमारतों में नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहरों की झलक मिलती है। 750 करोड़ की लागत से बन रहे इस खेल परिसर में राज्य खेल अकादमी, खेल विश्वविद्यालय और अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बन रहा है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य खेल अकादमी और बिहार खेल विश्वविद्यालय का उद्घाटन 29 अगस्त 2024 को किया है। हालांकि, अभी यहां निर्माण संबंधी कार्य जारी हैं और सारी सुविधाओं को आने में समय लगेगा। कैम्प के अंदर बिहार, बंगाल, झारखंड के अलग-अलग हिस्सों से आए मजदूर यहाँ बनी अस्थायी कॉलोनी में रहकर निर्माण कार्य कर रहे हैं।

इस संबंध में पूछे जाने पर राज्य के खेल मंत्री सुरेन्द्र मेहता कहते हैं, "अभी खेल परिसर में काम चल रहा है और हमें उम्मीद है कि साल 2025 के

नवंबर तक खेल यूनिवर्सिटी शुरू हो जाएगी और क्रिकेट स्टेडियम तैयार हो जाएगा। साथ ही बहुत सारे खेल के लिए सुविधाएं हम लोग मार्च 2025 तक शुरू कर पाएंगे।” इस कैम्पस में फुटबॉल, हॉकी, तैराकी, तीरंदाजी, बास्केटबॉल, हैंडबॉल, लॉन टेनिस, साइकलिंग, ताइक्वांडो, कबड्डी, जूडो और तलवारबाजी सहित कुल 23 खेलों के लिए इनडोर और आउटडोर स्टेडियम होंगे। इस खेल परिसर में छात्र-छात्राओं के लिए हॉस्टल, कोच आवास, ट्रांजिट हॉस्टल सहित कर्मचारियों के आवास होंगे। खेल अकादमी के तहत संचालित होने वाले इन 23 खेल के अलावा इस खेल परिसर में अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम भी निर्माणाधीन है। जाहिर है इतने बड़े आधारभूत सुविधाओं के लिए कई तरह की नियुक्तियां भी हो रही हैं। क्रिकेट स्टेडियम में कुल 114 पदों पर नियुक्ति होनी है जिसमें से 81 स्थाई पद हैं।

वहीं, स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी की बात करें तो नवंबर 2024 में ही सरकार ने इसके पहले कुलपति के तौर पर पूर्व आईएसएस शिशिर सिन्हा की नियुक्ति की है।

राज्य सरकार की ओर से जारी प्रेस रिलीज़ के मुताबिक, “बिहार राज्य में शारीरिक शिक्षा, खेल विज्ञान, खेल प्रौद्योगिकी, खेल प्रबंधन, खेल परीक्षण के क्षेत्र में खेल शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ ही खेलों के लिए उच्च स्तरीय शोध केन्द्र के रूप में कार्य करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने 16 जुलाई 2021 को बिहार खेल विश्वविद्यालय की स्थापना की स्वीकृति दी।” तकर्रीबन 13 करोड़ की आबादी वाले बिहार राज्य को खेल के मामले में ‘खोखला’ या ‘स्पोर्ट्स डेफिसिट स्टेट’ भी कहा जाता है। सरकार इस ‘परसेप्शन’ को तोड़ने के लिए हाल के सालों में कोशिशें कर रही है।

यही वजह है कि इस साल 9 जनवरी को सरकार ने खेल गतिविधियों और खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए ‘खेल विभाग’ का गठन किया। इससे पहले खेल की गतिविधियां ‘कला, संस्कृति और युवा विभाग’ के अधीन थी। इससे पहले राज्य सरकार ने बिहार राज्य खेल प्राधिकरण का गठन किया था।

बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के महानिदेशक और राज्य खेल अकादमी के निदेशक रविन्द्र शंकरण कहते हैं, “हमें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तरफ से एक रोड मैप मिला है, जिस पर प्राधिकरण काम कर रहा है। पहला बिहार में खेल को एक आंदोलन का रूप देना। दूसरा साल 2028 के ओलंपिक्स में भारतीय टीम में बिहार के बच्चों का शामिल होना और तीसरा 2032-36 के ओलंपिक में मेडल जीतना है।” मेडल जीतने के लिए सबसे पहले तो खिलाड़ी चाहिए और उसके बाद इन खिलाड़ियों को तराशने के लिए कोच चाहिए।

और इन दो पहलू के बारे में पूछे जाने पर शंकरण कहते हैं, “हम लोगों ने 14 खेल में 200 कोच की नियुक्ति करने के लिए विज्ञापन निकाला है। हम फिलहाल राजगीर खेल परिसर को स्टेट सेंटर फॉर एक्सीलेंस और बाद में नेशनल सेंटर फॉर एक्सीलेंस बनाने का लक्ष्य रखते हैं।”

वैसे पिछले कुछ सालों में देखें तो राष्ट्रीय स्तर पर बिहार के युवा खेल कूद की प्रतियोगिताओं में नजर आने लगे हैं। बिहार ने साल 2022 में गुजरात में हुए नेशनल गेम्स में महज दो कांस्य पदक हासिल किए थे। लेकिन, साल 2023 में गोवा में हुए नेशनल गेम्स में ये आंकड़ा बढ़कर नौ तक पहुंचा था, जिसमें छह कांस्य और तीन रजत पदक शामिल थे। इसी तरह नेशनल स्कूल गेम्स में 2017-18 में जहां राज्य को 37 पदक मिले थे, उनकी गिनती 2023-24 में बढ़कर 74 हो गई।

नवजीवन संदेश नवंबर 2024 | 30



इसके अलावा पैरालंपिक गेम्स और चीन में हुए एशियन गेम्स में भी राज्य ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। भारतीय महिला हॉकी के राष्ट्रीय कोच हरेन्द्र सिंह बिहार के सारण जिले के हैं।

उन्होंने कहा, “मैं 57 देश घूमा हूँ और बिहार में बन रहा ये खेल परिसर दुनिया के अच्छे स्पोर्ट्स प्रांगण में से एक है। मेरी बिहार के अभिभावकों से ये अपील रहेगी कि अपने बच्चों को स्पोर्ट्स में लाए। स्पोर्ट्स सेहत, शोहरत और दौलत तीनों देता है।” परिसर को लेकर सरकारी दावों-वादों के बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या खेल परिसर बना देना काफी है?

इस सवाल पर खेल पत्रकार धर्मानाथ कहते हैं, “एक ही परिसर में यूनिवर्सिटी और खेल की सुविधाएं होने से एक खिलाड़ी के पास कई सारे ऑप्शन उपलब्ध होंगे। वो खेल खेलने के साथ-साथ स्पोर्ट्स साइंस, अकादमिक, न्यूट्रिशनिस्ट जैसी विधाओं में भी अपना करियर बना सकते हैं। ये बिहार को स्पोर्ट्स के फील्ड में स्थापित करेगा।” वहीं अंग्रेजी अखबार द हिंदू की खेल पत्रकार उत्तरा गणेशन का मानना है कि अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। वो कहती हैं, “यहां सिर्फ कॉम्प्लेक्स खड़ा कर देने से बात नहीं बनेगी। बल्कि साथ-साथ आपको नालंदा – राजगीर को अपने अंतरराष्ट्रीय-राष्ट्रीय खिलाड़ियों के हिसाब से विकसित करना होगा। अभी यहां से कनेक्टिविटी एक बड़ा इश्यू है, एप्रोच का रास्ता बहुत संकरा है, अच्छे होटल नहीं हैं। अभी हॉकी चैम्पियनशिप के लिए जो टीम आई है, उनको गया में ठहराया गया है। जहाँ से आने-जाने में ही उन्हें डेढ़ से दो घंटे लग रहे हैं।”

जाहिर है कि अभी सुविधाओं से लेकर खेल प्रतिभाओं तक की पहचान की दिशा में काफी कुछ होना है। राज्य सरकार ने इसके लिए हाल ही में प्रदेश भर की पंचायत में खेल क्लब बनाने का कार्यक्रम बनाया है। यानी जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं के केन्द्र यानी सरकारी स्कूलों में प्रतिभाओं को परखने की जिम्मेदारी शारीरिक शिक्षकों पर है। लेकिन, ये शिक्षक राज्य सरकार के खिलाफ लगातार आंदोलन करते आए हैं।

यानी जिन पर टैलेंट स्काउटिंग या प्रतिभाओं को ढूँढने – संवारने की जिम्मेदारी है, वही नाराज हैं। बिहार में सरकारी स्कूलों में काम कर रहे शिक्षकों को हर माह मात्र 8,000 रुपये

मानदेय के तौर पर मिलते हैं। बिहार राज्य शारीरिक शिक्षक सह अनुदेशक संघ के राजेश कुमार पांडेय बताते हैं, “साल 2022 में हम लोगों की परीक्षा लेकर नियुक्ति की गई थी। 2500 शारीरिक शिक्षक नियुक्त हैं। रोज आठ घंटे की ड्यूटी देते हैं, होमगार्ड की बहाली, छठ पूजा, गया में पिंडदान से लेकर हर छोटे बड़े काम में सरकार हमें लगा देती है, लेकिन मानदेय एक मजदूर से भी कम देती है।”

जब इस संबंध में खेल मंत्री सुरेन्द्र मेहता से सवाल पूछा तो उन्होंने जवाब दिया, “ये हमारे अंडर में नहीं हैं।” ऐसे में ये सवाल है कि बिहार के अंदरूनी इलाकों में प्रतिभाओं की पहचान अगर नहीं होगी, तो स्थापित आधारभूत संरचना का लाभ, राज्य को खेल पटल पर कैसे मिलेगा?

पंचायत खेल क्लब बनाने के अलावा सरकार ने खेल छात्रवृत्ति और मेडल लाओ, नौकरी पाओ योजना भी शुरू की है। मोहम्मद अफ़जल आलम और श्यामा रानी फुटबॉल के खिलाड़ी हैं। इन दोनों ही खिलाड़ियों को स्पोर्ट्स कोटा से नौकरी मिली है। इन दोनों का दावा है, “बिहार सरकार अपनी योजनाओं को जमीनी स्तर पर पहुंचाने की कोशिश कर रही है और अगर आप बिहार सरकार का कैलेंडर देखें तो राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गतिविधियां लगातार हो रही हैं। जो खेल प्रतिभाओं को सामने लाने का एक प्रोसेस है।”

खेल प्राधिकरण के महानिदेशक रविन्द्र शंकरण बताते हैं, “सिर्फ दो महीने में हमने 71 खिलाड़ियों को नौकरी दी है। बिहार पहला ऐसा स्टेट है, जिसमें खिलाड़ी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मेडल जीतकर लाएंगे, पोर्टल पर अपलोड करेंगे और उन्हें उनकी उपलब्धि के हिसाब से नौकरी मिलेगी। इसमें कोई लालफीताशाही नहीं चलेगी।”

राजगीर खेल परिसर, राज्य में उम्मीदों के रथ पर तो सवार करता है, लेकिन खेल की दुनिया में कामयाबी केवल दांचों के बनने से नहीं मिलती है, लगन और नीयत के साथ प्रतिभाओं को निखारना होगा। लेकिन फिलहाल ये नया और निर्माणाधीन परिसर खिलाड़ियों के लिए खुश होने का मौका है। जैसा कि राज्य के उभरते हुए हॉकी खिलाड़ी ज्योतिष कुमार कहते हैं, “एक पॉजिटिव फीलिंग हो रही है। पहले हम लोगों को टर्फ नहीं मिलता था। घास पर खेलते थे और सीधे टूर्नामेंट में खेलते थे। अब खेल सुविधाएं बढ़ने से हम अपना अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे।”



भारतीय महिला हॉकी टीम के एक-एक सितारे में है जोश, जुनून, जज्बा और चैंपियन बनने की भूख

चंचल भट्टाचार्य

कहने को तो एक पंक्ति में खबर बस इतनी है कि पहली बार बिहार के राजगीर के अति आधुनिक एस्ट्रो टर्फ स्टेडियम में संपन्न महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी 2024 में भारतीय महिला हॉकी सितारों ने अपना ऐसा जलवा दिखाया जिसके कारण न केवल वह लगातार तीसरी बार चैंपियन बनी बल्कि 2028 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक में चैंपियन बनने के सपने को जगा दिया है। भारतीय महिला हॉकी टीम का अगला लक्ष्य लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिये क्वालीफाई करना है और निश्चित रूप से राजगीर में भारतीय लड़कियों ने जैसा खेल कौशल, प्रबल मानसिक क्षमता, आपसी सामंजस्य के साथ ही खेल के दौरान निर्णय लेने की जिस दक्षता का प्रदर्शन किया है उसके नजरिये से यह कहा जा सकता है कि यह लक्ष्य पूरी तरीके से संभव है। झारखण्ड के एक गाँव से निकलकर अंतरराष्ट्रीय हॉकी क्षितिज पर छा जानेवाली महिला सलीमा टेटे ने अपनी कप्तानी में राजगीर में भारतीय महिला हॉकी को जो चमक प्रदान की है वह अद्भुत है। पूल मैच में चीन के साथ मुकाबले में झारखण्ड की संगीता कुमारी और कप्तान सलीमा टेटे के साथ ही हरियाणा की दीपिका सहरावत ने एक-एक गोल कर चीन को 3-0 से हराया था। लेकिन चीन के साथ ही फाइनल खेलने के दौरान दीपिका सहरावत के इकलौती गोल से चीन परास्त हो

गया और भारतीय टीम चैंपियन बनी। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भारतीय टीम ने अपने सभी पाँच पूल मैच के साथ ही सेमीफाइनल में जापान के साथ और फाइनल में भी जीत दर्ज कर यह प्रदर्शित कर दिया कि लॉस एंजिल्स ओलंपिक के मद्देनजर वह 2026 में आयोजित होनेवाली महिला हॉकी विश्व कप और एशियाई खेल में यदि भारतीय टीम कसौटी पर खरी उतरती है तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि 2028 में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में भारतीय महिला हॉकी टीम गोल्ड की प्रबल दावेदार होगी।

2016 में सिंगपुर में आयोजित एशियाई हॉकी चैंपियनशिप में भारतीय टीम ने चीन को 2-1 से हराकर महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के खिताब पर अपना कब्जा जमाया था। पुनः भारतीय महिला हॉकी टीम ने 2023 में रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में भी यह खिताब जीता और अब तीसरी बार राजगीर में। भारत ने लगातार तीसरी बार यह खिताब जीतकर दक्षिण कोरिया के सबसे ज्यादा तीन बार खिताब जीतने के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। भारतीय महिला हॉकी हॉकी टीम की सबसे बड़ी ताकत उसकी वे सभी खिलाड़ी हैं जो अनुभव के साथ ही उत्साह से भी भरपूर हैं। ग्रामीण परिवेश से निकलकर भारतीय हॉकी टीम का हिस्सा बनने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय हॉकी क्षितिज पर छा जाने के लिये उनमें गजब का उत्साह है।

रांची में आयोजित ओलंपिक क्वालीफायर में काफी

बेहतर प्रदर्शन के बावजूद भारतीय टीम शुरुआत के तीन स्थान में जगह नहीं बना पायी और 2024 के पेरिस ओलंपिक का टिकट उसे हासिल नहीं हुआ। भारतीय महिला खिलाड़ियों ने अपनी उस असफलता को भुलाकर बिल्कुल सटीक प्रदर्शन किया और कप्तान सलीमा टेटे के साथ ही अनुभवी स्ट्राइकर वंदना कटारिया के स्थान पर शामिल हुई प्रीति दुबे, उप कप्तान नवनीत कौर, संगीता कुमारी, दीपिका सहरावत जैसी खिलाड़ियों ने भारतीय सपने को जमीन पर उतार दिया।

राजगीर में आयोजित टूर्नामेंट के दौरान दीपिका सहरावत ने अपने 11 में से छह गोल पेनाल्टी कार्नर से, चार मैदानी गोल और एक पेनाल्टी स्ट्रोक के सहारे किया जबकि संगीता कुमारी ने तीन मैदानी गोल करने के साथ एक पेनाल्टी कार्नर भी किया।

भारतीय टीम में झारखण्ड की आक्रामक सेंटर हॉफ सलीमा टेटे, स्ट्राइकर संगीता कुमारी और ब्यूटी डुंगडुंग हैं। जबकि उड़ीसा की सुनीलिता टोप्पो के साथ ही हरियाणा की नेहा गोयल, शर्मिला देवी, ज्योति रुमावत, दीपिका सहरावत, उदिता दुहान, नवनीत कौर और गोलरक्षक सविता भी हैं। पुर्वोत्तर की सुशीला चानू, बिच्छू देवी खरीबम और ललरेमसियामी भी भारतीय टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। भारतीय टीम की सबसे महत्वपूर्ण बात सभी खिलाड़ियों का ग्रामीण पृष्ठभूमि से होना है जो जमीन से जुड़ी तो हैं लेकिन उनका सपना ओलंपिक गोल्ड है।



2016 में भारत को विश्व कप पुरुष हॉकी में जीत दिला चुके अनुभवी कोच हरेंद्र सिंह की बातों पर भरोसा करें तो भारतीय महिला खिलाड़ियों में वे सभी बातें हैं जिसके कारण वह न केवल ओलंपिक में क्वालीफाई कर सकती है बल्कि ओलंपिक का गोल्ड भी हासिल कर सकती हैं। 21 नवम्बर को खेले गए इस चैंपियनशिप के फाइनल मैच के पहले हाफ में भारतीय टीम और चीन ने भी शानदार प्रदर्शन किया। दूसरे हाफ के पहले ही मिनट में भारत को मिले पेनाल्टी कार्नर को दीपिका सहरावत ने गोल में बदलकर भारत को बढ़त दिला दी जो अंत तक कायम रही। जापान के विरुद्ध 16 पेनाल्टी कार्नर में से एक को भी गोल में न बदल सकी भारतीय महिला खिलाड़ियों की कमजोरी पहले 30 मिनट में फिर से देखने को मिली जब उसे मिले चार पेनल्टी कार्नर बेकार गये।

इससे पहले जापान के खिलाफ खेले गये सेमीफाइनल में पहले तीन क्वार्टर में 16 पेनल्टी कार्नर गवाने के बाद भारतीय टीम ने आखिरी क्वार्टर में 2 गोल करके जापान पर 2-0 की बढ़त प्राप्त की।

वरीयता क्रम में दुनिया के 9 वें नंबर की टीम इंडिया ने राजगीर में अपने सभी पाँच पूल मैच जीते। पूल मैचों में भारत में मलेशिया को 4-0 से, कोरिया को 3-2 से, थाईलैंड को 13-0 से, चीन को 3-0 से और जापान को भी 3-0 से पराजित किया था।

भारतीय हॉकी टीम के प्रदर्शन के पीछे हॉकी इंडिया के महासचिव भोलानाथ सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा जिन्होंने अपनी सशक्त प्रबंधन क्षमता से टीम को उस स्थिति में पहुँचा दिया है जहाँ वह अपने विपक्षियों पर भारी पड़ती है। चाहे रांची में आयोजित टूर्नामेंट की बात हो या फिर राजगीर में लेकिन दोनों ही स्थान पर भारतीय महिलाओं ने अपना अपराजेय प्रदर्शन किया और विपक्षियों को धूल चटा दी।

बिहार के राजगीर में आयोजित यह टूर्नामेंट अनेक दृष्टिकोण से मील का पत्थर साबित होगा। सबसे पहली बात तो यही कि इसने बिहार की उस परंपरागत छवि को धो दिया है जहाँ यह माना जाता था कि खेल और खिलाड़ियों के दृष्टिकोण से बिहार जैसा प्रदेश अपनी सशक्त प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर सकता। आयोजन

की दृष्टिकोण से भी बिहार की छवि अबतक साफ-सुथरी नहीं रही थी। लेकिन इस आयोजन के बाद यह स्पष्ट हो गया कि बिहार भी अन्य प्रदेशों और बड़े आयोजन स्थलों की तरह ही अपनी आधारभूत संरचना के विकास के साथ सशक्त आयोजन करने में सक्षम है। साथ ही इसमें बिहार की बेहतरीन प्रबंधन क्षमता अपनी सशक्त भूमिका निभा सकती है। इसके कारण बिहार की समृद्धि की एक नयी कहानी भी लिखी जा सकती है और बिहार में पर्यटन का ऐसा अद्भुत विकास होगा जिसकी परिकल्पना शायद अब तक नहीं की गयी है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राजगीर में आयोजित यह टूर्नामेंट न केवल भारतीय महिला हॉकी के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा बल्कि बिहार के परिप्रेक्ष्य में भी यह ऐसा महत्वपूर्ण आयोजन था जिसे लंबे समय तक याद रखा जायेगा। इस आयोजन ने एक ऐसी आधारभूत संरचना और परिस्थिति तैयार कर दी है जबकि ऐसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन के लिये, बिहार सशक्तता के साथ अपना दावा प्रस्तुत कर सकता है।

महंगे तोहफे भेजना पैसों की बर्बादी थी; एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर हुई ट्रोल

सा उथ एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु इन दिनों अपनी नई स्पाई-एक्शन सीरीज 'सिटाडेल: हनी बनी' को लेकर सुर्खियों में हैं। इसी बीच एक्ट्रेस का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने कहा कि अपने एक्स को महंगे तोहफे भेजने का उन्हें काफी दुख होता है। हालांकि, सामंथा ने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन सोशल मीडिया पर यूजर्स इसे उनके एक्स-पति नागा चैतन्य से जोड़कर देख रहे हैं।

दरअसल, हाल ही में अमेजन प्राइम वीडियो ने दोनों स्टार का एक मजेदार वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वरुण धवन और सामंथा साथ में रैपिड फायर करते नजर आ रहे हैं। इसी दौरान वरुण ने सामंथा से सवाल किया कि ऐसी कौन सी चीज है, जिस पर आपने सबसे

ज्यादा पैसे खर्च किए और वह यूजलेस थी। इस सवाल का जवाब देते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि अपने एक्स के महंगे तोहफों पर, हालांकि वरुण ने कीमत जानने की भी कोशिश की, लेकिन एक्ट्रेस ने बात ही टाल दी।

सामंथा रुथ प्रभु का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। कई एक्ट्रेस को उनके इस जवाब के लिए ट्रोल कर रहे हैं, तो कुछ लोग उनका सपोर्ट करते हुए भी नजर आ रहे हैं।

एआर रहमान से नाम जुड़ने पर मोहिनी डे की सफाई



तलाक के बाद से ही सिंगर एआर रहमान का नाम उनके लिए काम करने वाली बेसिस्ट मोहिनी डे से जुड़ रहा था, क्योंकि दोनों ने एक ही दिन पर अपना-अपना तलाक अनाउंस किया। लिंक-अप की खबरों के बीच अब मोहिनी डे ने एआर रहमान को अपने पिता जैसा बताया है। साथ ही उन्होंने कहा है कि वो उनके पिता से बस कुछ ही साल छोटे हैं। साथ ही मोहिनी ने प्राइव्सी की मांग की है।

20 नवंबर को जिस दिन एआर रहमान ने तलाक अनाउंस किया, ठीक उसी दिन उनके साथ काम करने वाली मोहिनी डे ने भी तलाक की अनाउंसमेंट की थी। इसके बाद से ही मोहिनी डे का नाम एआर रहमान से जोड़ते हुए उन्हें तलाक की वजह माना जा रहा था। एआर रहमान पहले ही इस मामले में लीगल एक्शन लेने का फैसला कर चुके हैं, वहीं अब मोहिनी ने भी मुद्दे पर अपनी सफाई पेश की है।

मोहिनी डे ने हाल ही में एक वीडियो के जरिए एआर रहमान से रिश्ते पर सफाई दी है। उन्होंने कहा है कि सिंगर उनके लिए पिता की तरह हैं। मोहिनी ने एक वीडियो शेयर कर कहा है, मैं कुछ समय से दूर पर थी, अब मुझे सास लेने का मौका मिल गया है। मैं यहां आकर आप सबको बताना चाहती हूं कि मेरी जिंदगी में कई फादर फिगर और रोल मॉडल्स हैं। मैं बहुत शुकुगुजार हूं कि उनका मेरी जिंदगी में अहम रोल रहा है। एआर उनमें से एक हैं। एआर से मेरा मतलब एआर रहमान हैं।



ऐश्वर्या बोली- महिलाओं का चुप रहना गलत

ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन इन दिनों अपने तलाक की अफवाहों को लेकर काफी सुर्खियों में हैं। इसी बीच ऐश्वर्या राय ने हाल ही में एक वीडियो शेयर किया है। जिसमें एक्ट्रेस ने हैरेसमेंट को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि महिलाओं को हैरेसमेंट के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, चुप नहीं रहना चाहिए। ऐश्वर्या राय ने एक ब्रांड से जुड़ी हुई हैं, और उसकी ब्रांड एम्बेस्डर हैं। उसी ब्रांड के लिए उन्होंने एक प्रमोशनल वीडियो बनाया है। लेकिन इसमें एक्ट्रेस प्रोडक्ट्स की नहीं, बल्कि हैरेसमेंट के बारे में बात कर रही हैं। ऐश्वर्या वीडियो में महिलाओं को हैरेसमेंट से डील करने को लिए मोटिवेट कर रही हैं।

उन्होंने कहा- महिलाओं को हर मुश्किल का बहादुरी से सिर उठाकर सामना करना चाहिए। महिलाओं को अपनी सेल्फ रिस्पेक्ट के साथ कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए। महिलाओं को मुश्किल समय में खुद पर ट्रस्ट करना चाहिए, खुद को शक की नजरों से नहीं देखना चाहिए।



राशिफल



मेघ

मेघ राशि के लोगों के लिए यह माह शुभता लिए हुए है। मेहनत का पूरा फल मिलने से आपके उत्साह में वृद्धि होगी और मन प्रसन्न रहेगा। सप्ताह की शुरुआत उन लोगों के लिए बेहद शुभ रहने वाली है जो अभी तक सिंगल हैं। इस दौरान उनके जीवन में किसी मनचाहे व्यक्ति की इंट्री हो सकती है या फिर उनका विवाह तय हो सकता है। किसी व्यक्ति की मदद से सत्ता-शासन से संबंधित अटके हुए में गति आयेगी।



मिथुन

मिथुन राशि के लोगों के जीवन में इस सप्ताह अचानक से आने वाली कोई आपदा बड़े अवसर में बदल सकती है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अचानक से कोई बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है, जिसे निभाने के लिए आपको अतिरिक्त समय निकालकर परिश्रम करना पड़ेगा। हालांकि यह प्रसास व्यर्थ नहीं जाएगा और यह आपके करियर को आगे बढ़ाने में काफी मददगार साबित होगा।



सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह अनुकूल रहने वाला है। सप्ताह की शुरुआत में किसी प्रभावी व्यक्ति से हुई मुलाकात भविष्य में लाभ की योजनाओं से जुड़ने का माध्यम बनेगी। कार्यक्षेत्र में सीनियर की कृपा बनी रहेगी और जूनियर भी पूरा सहयोग करते हुए नजर आएं। जो लोग लंबे समय से नौकरी में बदलाव की ख्वाहिश पाले हुए थे, उन्हें इस सप्ताह मनचाहा अवसर प्राप्त हो सकता है।



तुला

तुला राशि वालों की आज मित्रों से खूब बातें होंगी और मन भी प्रसन्न रहेगा। नए जोश के साथ आप हर काम की शुरुआत करेंगे। ऑफिस में सहकर्मियों से आप खूब बातें करेंगे और प्यार से पेश आएं, जिससे आपके संबंधों में सुधार आएगा। इसका लाभ आपको भविष्य में मिलेगा। व्यापार के लिए दिन अच्छा है और स्वास्थ्य भी मजबूत रहेगा। लव लाइफ में खुशियों से भरा दिन रहेगा।



धनु

छोटी-मोटी समस्याओं को इग्नोर कर दिया जाए तो आपके लिए यह सप्ताह कुल मिलाकर शुभ साबित होने वाला है। हालांकि होने के लिए आपको अपने समय और धन का प्रबंधन करके चलना होगा। सप्ताह की शुरुआत में समाजसेवा से जुड़े लोगों को किसी कार्य के लिए सम्मानित किया जा सकता है। इस दौरान आपका मन धर्म-कर्म में ज्यादा रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग मिलेगा।



कुंभ

कुंभ राशि के लिए यह सप्ताह शुभता एवं लाभ लिए हुए है। सप्ताह की शुरुआत में किसी प्रभावी व्यक्ति से मुलाकात होगी, जिसकी मदद से भविष्य में लाभ से जुड़ी किसी योजना जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में बड़ा पद या कोई बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। वेतन और सम्मान में वृद्धि के योग बनेंगे। यदि आप लंबे समय से अपने काम में बदलाव की सोच रहे थे तो यह मनोकामना पूरी हो सकती है।



वृषभ

वृष राशि के लोगों के लिए यह महिना कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। घरेलू समस्या को लेकर मन चिंतित रहेगा। पैतृक संपत्ति से जुड़े विवाद गहरा सकते हैं, लेकिन बेहतर होगा कि आप उसे बजाय कोर्ट-कचहरी ले जाने के आपसी संवाद सुलझाने का प्रयास करें। व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस सप्ताह जोरिधम भरे निवेश से बचना चाहिए। सप्ताह के मध्य में छात्रों का मन पढ़ाई से उचट सकता है।



कर्क

कर्क राशि के जातकों को इस सप्ताह सौभाग्य का साथ अपेक्षा के अनुरूप कम ही मिल पाएगा वहीं निजी जीवन में आने वाली कुछ एक अड़चनें आपकी मानसिक चिंता का बड़ा कारण बनेगी। सप्ताह की शुरुआत में घर-परिवार के किसी बजुर्ग सदस्य की सेहत को लेकर मन चिंतित रहेगा। इस दौरान घर की मरम्मत आदि कार्यों में आपकी जेब से अधिक खर्च हो सकता है, जिससे आपका बजट गड़बड़ा सकता है।



कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। कन्या राशि के जातकों को कार्यक्षेत्र में मिले टारगेट को पूरा करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करने की जरूरत रहेगी। सिर्फ कार्यक्षेत्र ही नहीं बल्कि जीवन से जुड़े जिस भी क्षेत्र में कार्य सिद्धि के लिए प्रयास करेंगे, उसमें अत्यधिक परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए यह सप्ताह अपेक्षा मुकाबले थोड़ा कम लाभ देने वाला रहेगा।



वृश्चिक

वृश्चिक राशि वाले आज मानसिक तनाव से बाहर आने से मन में प्रसन्नता की अनुभूति होगी। घर में आज कोई समारोह हो सकता है और अच्छे व्यंजन खाने का मौका मिलेगा। घर में खुशियों का आगमन होगा। सेहत भी अच्छी रहेगी, जिससे आप हर खुशी का लुप्त उठा पाएंगे। गृहस्थ जीवन सुंदर रहेगा। जीवनसाथी घर की सुख-समृद्धि में भागीदार बनेगा। लव लाइफ वाले काफी खुश नजर आएं, मित्रों से अपने पार्टनर की मुलाकात करवाएं।



मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह अनुकूल साबित होगा। सप्ताह की शुरुआत में ही करियर-कारोबार से जुड़ी कोई शुभ सूचना मिल सकती है, जिससे आपके घर-परिवार में खुशियों का माहौल बना रहेगा। जो लोग विदेश में पढ़ाई या व्यवसाय के लिए प्रयासरत थे, उनकी राह में आ रही अड़चनें दूर हो सकती हैं। यदि कोई मामला कोर्ट-कचहरी में चल रहा था तो उसमें फैसला आपके हक में आ सकता है।



मीन

मीन राशि के जातकों को इस सप्ताह की शुरुआत में पास के लाभ के लिए दूर का नुकसान करने से बचना होगा। इस दौरान आप उन लोगों से उचित दूरी बनाकर रखें जो आपको अक्सर किसी न किसी बड़ी उलझन में उलझा कर निकल जाते हैं। किसी के बहकावे या फिर भावनाओं में बहकर कोई बड़ा फैसला लेने से बचें। घर हो या फिर आपका कार्यक्षेत्र लोगों की छोटी-मोटी बातों को इग्नोर करना उचित रहेगा।

राज्य गठन में कुड़मी महतो बिरादरी का अमूल्य योगदान रहा है। शैलेंद्र महतो, निर्मल महतो, सुनील महतो, सुधीर महतो, विद्युत वरण महतो और भी अनेक आंदोलनकारी। विद्युत वरण महतो तो निर्मल महतो से सीनियर आंदोलनकारी रहे हैं। बहरागोड़ा से विधायक भी।

कुड़मी महतो समुदाय की उपेक्षा महंगा पड़ा !

झा

रखंड विधानसभा चुनाव 2024 के परिणाम आ गए हैं। झामुमो के नेतृत्व में गठबंधन सरकार गठन की अंतिम प्रक्रिया चल रही है। इस गठबंधन को प्रचंड बहुमत मिला है। इस चुनावी समर में भाजपा ने खूब पसीना बहाया पर उसे इसका आशातीत प्रतिफल नहीं मिला। कारण अनेकों हो सकते हैं। इस पर मनन भी चल रहा होगा। एक कारण जिस पर गौर करना आवश्यक हो जाता है और वह है कुड़मी महतो समुदाय पर बीजेपी का काम ध्यान या उपेक्षा भाव। या फिर इस समुदाय को दूसरे के भरोसे छोड़ जाना।

वर्ष 2000 के पूर्व तक कुड़मी महतो बीजेपी का कोर वोटर रहा है। झारखंड राज्य के गठन के बाद यह वोट बैंक खिसका है। इस पार्टी ने इस समुदाय को सिर्फ एमपी एमएलए बनने तक सीमित रखा है। संवैधानिक पद देने में घोर कंजूसी बरती गई है। नतीजतन आज झारखंड अलग राज्य की चिंगारी

जमशेदपुर (कोल्हान) जहां से फूटी एकमात्र बीजेपी के एमपी विद्युत वरण महतो हैं। यह भी नहीं भूले कि झारखंड राज्य की राजधानी रांची संसदीय सीट से लंबे समय तक कुड़मी महतो समुदाय के नेता रामटहल चौधरी एमपी बनते आए थे।

राज्य गठन में कुड़मी महतो बिरादरी का अमूल्य योगदान रहा है। शैलेंद्र महतो, निर्मल महतो, सुनील महतो, सुधीर महतो, विद्युत वरण महतो और भी अनेक आंदोलनकारी। विद्युत वरण महतो तो निर्मल महतो से सीनियर आंदोलनकारी रहे हैं। बहरागोड़ा से विधायक भी। समय आ गया है कि कुड़मी, मंडल और आदिवासी समुदाय को नेतृत्व का कमान सौंपा जाना चाहिए। केंद्र सरकार में भी मूलवासी को जगह देनी ही पड़ेगी। यहां एक बात का जिक्र भी जरूरी हो जाता है भाजपा के दिग्गज नेता और राज्य के कई दफे मुख्यमंत्री रहे अर्जुन मुंडा की पत्नी मीरा मुंडा की इस विधानसभा चुनाव में करारी हार हुई है वह जहां से चुनाव लड़ रही थी

पोटका विधानसभा क्षेत्र में भूमिज

जनजाति की बहुसंख्यक आबादी है। झामुमो के संजीव सरदार को इस समुदाय का वोट एकमुश्त मिला और उनकी जीत की राह आसान हो गई।

नेपथ्य में जाए झारखंड में कुड़मी महतो की बड़ी आबादी है। इस समुदाय के युवा भाषा, संस्कृति व रोजगार के लिए आंदोलित रहे हैं। कई कारणों से सुदेश महतो की नेतृत्व वाली आजसू पार्टी की चमक कम हुई है। इस पार्टी पर समुदाय का भरोसा रहा है। समय का चक्र तेजी से बदला है अब समुदाय के अधिसंख्य युवाओं का झुकाव अब तेजी से उभरे झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के प्रमुख जयराम महतो की ओर हुआ है। झारखंड विधानसभा के संपन्न हुए चुनाव में कुड़मी महतो समुदाय के युवाओं की पसंद जयराम महतो रहे। वह उनकी पहली पसंद के रूप में उभरे। नतीजतन जेएलकेएम ने न सिर्फ अपना खाता खोला, इस पार्टी के सुप्रीमो ने विजयश्री हासिल की। साथ ही उसने 81 सीटों वाली झारखंड विधानसभा की 14 सीटों पर चुनाव परिणामों में फेर बदल कर दिया। जयराम महतो की पार्टी उम्मीदवारों ने 20000 से लेकर

लेकर 70000 से ज्यादा वोट प्राप्त किए। झारखंड के परिपेक्ष में अब यह कहना प्रासंगिक होगा कि सूबे के बहुसंख्य मूलवासी कुड़मी महतो समुदाय की अवहेलना न सिर्फ भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) बल्कि सुदेश महतो की नेतृत्व वाली आजसू पार्टी को महंगा पड़ा है बल्कि उसे अर्श से उठाकर फिर फर्श में पटक दिया गया है।



झारखंड विधानसभा चुनाव राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के लिए स्फूर्तिदायक, फलदायक साबित हुआ है. गोड्डा विधानसभा सीट पर संजय यादव ने जीत का परचम लहराया है. उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा के अमित मंडल को 21471 मतों से हराया. संजय यादव को 109487 वोट मिले जबकि अमित मंडल को 88016 मत.

